साप्ताहिक

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा का मुख पत्र

जैन गज़ट

डाक पंजीयन संख्या LW/NP-351

वर्ष ९७ | लखनऊ, गुरुवार ४ नवम्बर, १९९३ आश्विन वदी ५, वीर निर्वाण संवत् २५१९ | अंक ४९

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर महाराज

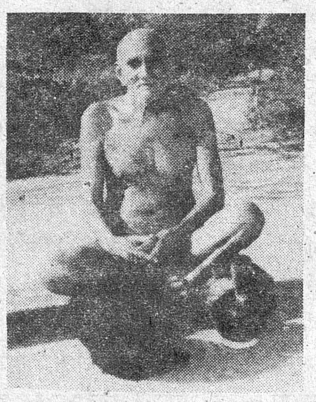

श्री सम्मेदशिखर जी (बिहार)।

आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज का ७८ वां जन्म जयन्ती समारोह वात्सल्य रत्नाकर के रूप में सम्पन्न

वात्सल्य रत्नाकर अभिवंदन ग्रंथ का विमोचन : श्री आर.के.जैन गुरुभक्त शिरोमणी से अलंकृत : त्रिदिवसीय समारोह में देश के कोने-कोने से भक्त गण एकत्रः बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा श्री सम्मेदशिखर जी की व्यवस्था के लिये बोर्ड बनाने की घोषणा

सन्मार्ग दिवाकर परम पूज्य आचार्य श्री १०८ विमल सागर जी महाराज का ७८ वां जन्म जयन्ती समारोह यहां दिनांक ७-८-९, अक्टूबर १९९३ को मध्य लोक संस्थान, मधुबन में वात्सल्य रत्नाकर महोत्सव के रूप में अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज ससंघ, आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज ससंघ, आचार्य श्री संभवसागर जी महाराज संघ, आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज एवं उपाध्याय श्री चन्द्रसागर जी महाराज एवं अन्य त्यागियों के पुनीत सानिध्य में अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। ४ अक्टूबर को मृत्युंजय विधान, ५ अक्टूबर को ऋषि मण्डल विधान, ६ अक्टूबर को शांति विधान, ७ अक्टूबर को सत्वेषु मैत्री पर मैत्री सभा, ८ अक्टूबर को वात्सल्य रत्नाकर सभा (विषय गुणिसु प्रमोदं) एवं ९ अक्टूबर को केशलोंच समारोह एवं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं पर कारुण्य सभा का आयोजन हुआ।

समारोह में ७ अक्टूबर को बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव भी पधारे। उन्होंने आचार्य विमल सागर जी महाराज के चरणों में अपनी विनयांजलि प्रकट करते हुए कहा कि जैन संतों के सानिध्य से यह क्षेत्र अत्यन्त पवित्र हो गया है। विमल सागर जी महाराज सन्मार्ग दिवाकर संत हैं। श्री यादव ने जैनियों से मिलजुलकर श्री सम्मेदशिखर (पारसनाथ पर्वत) की गरिमा बनाए रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि वह इस निमित्त सभी सहयोग करने को तैयार हैं।

श्री लालू प्रसाद जी यादव ने श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी तथा महामंत्री श्री त्रिलोकचन्द जी कोठारी एवं श्री चन्द्रप्रकाश जी कोठारी के निवेदन पर यह घोषणा की कि श्री सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र पर्वत के समस्त जिनालय व टोंकों की व्यवस्था के लिये एक बोर्ड बनेगा, जिसमें दिगम्बर, श्वेताम्बर एवं बिहार सरकार के प्रतिनिधि होंगे। कोई भी प्राचीन चिन्हों में फेर-बदल नहीं करने दिया जावेगा।

इस घोषणा का सब लोगों ने ताली पीट कर जोरदार स्वागत किया।

उन्होंने यह स्वीकार किया कि १८ किलोमीटर की पदयात्रा करने के लिये यात्रियों को रात में उठना पड़ता है तथा कहीं भी ठहरने की जगह दिगम्बर जैन यात्रियों को नहीं मिलती।

उन्होंने यह भी घोषणा की कि पहाड़ पर जो दिगम्बर जैन मन्दिर बन रहा है और जिस भूमि पर राज्य सरकार का स्वामित्व है, उस भूमि का आवंटन संस्था को नियमानुसार कर दिया जावेगा, जिससे मन्दिर बनाने में कोई अड़चन न हो।

मुख्यमंत्री जी ने पूज्य आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के बारे में कहा

शेष पेज ७ पर

णमोकार वाले बाबा आचार्य श्री कल्याणसागर का निधन

मन्दसौर (म०प्र०)। णमोकार वाले बाबा के नाम से विख्यात, करुणामूर्ति, परम पूज्य आचार्य श्री १०८ कल्याणसागर जी महाराज का यहां से १५ किलोमीटर दूर बही पार्श्वनाथ चौपाटी स्थित णमोकार साधना स्थली पर दिनांक २१ अक्टूबर, ९३ गुरुवार को प्रातः ९.०५ पर समाधिपूर्वक देवलोक गमन हो गया।

पूज्य आचार्य श्री विगत एक सप्ताह से अस्वस्थ्य थे और अपने जीवन के आखिरी दौर में आचार्य श्री यहां बही पार्श्वनाथ चौपाटी पर णमोकार साधना केन्द्र, नशा मुक्ति केन्द्र एवं मंदिर निर्माण की अपनी योजना को मूर्त रूप देने में व्यस्त थे। उनके निधन से समस्त जैन समाज में शोक व्याप्त हो गया। जगह-जगह शोक सभायें कर णमोकार वाले बाबा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। जावद, नीमच, मंदसौर आदि की दिगम्बर जैन समाज ने अपनी दुकाने बंद रखी।

आचार्य श्री कल्याणसागर जी का जन्म मन्दसौर जिले के जमुनियां ग्राम में हुआ था, आपका गृहस्थावस्था का नाम श्री शांतिलाल जी पाटनी था। आप वहां कुशल व्यवसायी थे। इन्दौर में अपने रिश्तेदार के यहां रुके हुये थे। रात्रि में सिनेमा देखने गये। वहीं आपको वैराग्य भाव हो गया। वहां से आप मन्दसौर आये और यहां चातुर्मास कर रहे श्री सन्मतिसागर जी महाराज से सीधी मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली। आपको णमोकार मंत्र की सिद्धि होने से लाखों रोगियों को लाभ मिला। आचार्य श्री ने अपने जीवन में सभी धर्म के लोगों को समान महत्व दिया।

यह भी एक संयोग है कि आचार्य श्री ने १० वर्ष पूर्व २५ नवम्बर, १९८३ को दीक्षा भी प्रातः ९.०५ बजे ग्रहण की थी और आज देह भी इसी समय त्यागी। देह त्यागने से २४ घंटे पूर्व आपने संल्लेखना

शेष पेज ७ पर

आचार्य श्री कल्याणसागर

पारसनाथ में डकैतों ने गोली चलाई, जैन समाज क्षुब्ध

रांची, २० अक्टूबर। जैनियों के सर्वाधिक पूज्य तीर्थक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर (पारसनाथ पर्वत) पर कल प्रातः यात्रियों को लूटा गया तथा लूट का विरोध करने पर एक यात्री को लुटेरों ने गोली मार दी। गोली से गंभीरवस्था में घायल श्री सुखनन्दन जैन यहां इलाज के लिये लाये गये हैं तथा उन्हें स्थानीय नागरमल मोदी सेवा सदन में भर्ती कराया गया है। आज प्रातः उनका आपरेशन विख्यात चिकित्सक श्री एच.पी. नारायण ने किया। चिकित्सक के अनुसार घायल व्यक्ति की स्थिति खतरे से बाहर नहीं है।

बताया जाता है कि लूट एवं गोली चालन की यह घटना पारसनाथ पहाड़ स्थित भगवान चन्द्रप्रभु की टोंक के पास घटी। लुटेरों ने पर्वत पर लगभग २०-२५ जैन यात्रियों से घड़ी, जेवरात एवं नगदी लूटे। गोली से घायल तीर्थयात्री श्री सुखनन्दन जैन सागर (म.प्र.) के हैं।

पारसनाथ पहाड़ पर हुई इस घटना

शेष पेज ७ पर

जैन गजट का श्रवणबेलगोला विशेषांक

जैन गजट का श्रवणबेलगोला विशेषांक दिनांक ११ नवम्बर, ९३ की जगह अब २५ नवम्बर, ९३ को प्रकाशित होगा। इससे संबंधित प्रकाशनार्थ सामग्री ५ नवम्बर तक निम्न पते पर भेजना है।

नरेन्द्रप्रकाश जैन
१०४, नई बस्ती, फिरोजाबाद
(उ०प्र०)

इस विशेषांक के लिये विज्ञापन भी सादर आमंत्रित है।
- प्रकाशक

दशलक्षण पर्व में शास्त्रि परिषद के विद्वान कहां कहां

गतवर्षों की भांति पर्वराज दशलक्षण में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद के विद्वानों ने विभिन्न नगरों-उपनगरों में अपने प्रवचनों के माध्यम से जिनधर्म की महती प्रभावना की।

नाम	स्थान
१. पं० श्री सागरमल जैन, विदिशा	हैदराबाद
२. प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन, फिरोजाबाद	मैनपुरी
३. पं० श्री शिवचरण लाल जैन, मैनपुरी	गुवाहटी
४. पं० श्री विमलकुमार जैन सोंरया, टीकमगढ़	अलवर
५. प्रतिष्ठाचार्य श्री शिखरचंद जैन, भिण्ड	तेजपुर (आसाम)
६. डा० श्री श्रेयांसकुमार जी जैन, बड़ौत	अजमेर
७. डा० श्री रमेशचन्द्र जी जैन, बिजनौर	मुरैना
८. डा० श्री सुपार्श्वकुमार जी जैन, बड़ौत	कोटा
९. डा० श्री दयाचन्द जी जैन, सागर	अलीगढ़
१०. पं० श्री सुमतिचंद जैन शास्त्री, मुरैना	गया
११. पं० श्री मूलचन्द जी जैन, टीकमगढ़	जबलपुर
१२. पं० श्री धर्मचन्द जी जैन, इन्दौर	झांसी
१३. प्रतिष्ठाचार्य फतहसागर जैन, उदयपुर	खार (बम्बई)
१४. प्रतिष्ठाचार्य पं० श्री गुलाबचंद जैन "पुष्प" टीकमगढ़	अनंदपुरी (कानपुर)
१५. पं० श्री अजितकुमार जैन शास्त्री, झांसी	सदर (झांसी)
१६. पं० श्री डा० रतनचंद जैन, भोपाल	रायपुर
१७. पं० श्री डा० भागचंद जैन भागेन्दु, दमोह	भोपाल
१८. पं० श्री बालमुकुंद शास्त्री, मुरैना	सीसामऊ (कानपुर)
१९. पं० श्री हेमचन्द जैन शास्त्री, अजमेर	निवाई (राजस्थान)
२०. पं० श्री धर्मचन्द जैन, उज्जैन	उज्जैन
२१. पं० श्री शिखरचंद जैन, सागर	सुजानगढ़
२२. पं० श्री पवनकुमार जैन शास्त्री, मुरैना	सूरत
२३. डा० शेखरचन्द जैन, अहमदाबाद	सोलारोड (अहमदाबाद)
२४. डा० कपूरचन्द जी जैन, खतौली	राजा की मंडी (आगरा)
२५. पं. श्री महेन्द्रकुमार जैन शास्त्री, मुरैना	बुरहानपुर
२६. पं० श्री केवलचन्द जी जैन, आगरा	लुहारिया
२७. पं० श्री उत्तमचंद जैन राकेश, ललितपुर	गुलालवाड़ी (बम्बई)
२८. पं० श्री यतीन्द्रकुमार जैन, लखनादौन	भोपाल
२९. पं० श्री कपूरचंद जैन, इमलिया, सागर	धर्मपुरी
३०. डा० श्री महेन्द्रसागर प्रचण्डिया, अलीगढ़	फीरोजाबाद
३१. प्राचार्य श्री निहालचंद जी जैन, बीना	सर्वऋतु विलास, उदयपुर
३२. पं० श्री मांगीलाल जैन, कूंण	बेरसिया (भोपाल)
३३. पं० श्री राजकुमार जैन, भिण्ड	तेजपुर
३४. पं० श्री नेमीचन्द जैन, नोंगाव	नरवर
३५. पं० श्री राजकुमार जैन, बड़ौत	अहमदाबाद
३६. पं० श्री कमल जैन, मुरैना	शाहपुर
३७. पं० श्री मथुराप्रसाद जैन, बर्मातल	बाराबंकी
३८. पं० श्री हुकुमचन्द जैन, पाली	खेकड़ा
३९. डा० श्री जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर	मुजफ्फरनगर
४०. डा० श्री सुरेन्द्र जैन भारती, बुरहानपुर	अकलूज
४१. पं० श्री भरतकुमार जी जैन, काला, बम्बई	बम्बई
४२. पं० श्री दीपचन्द जैन, नांदसी	जबलपुर
४३. पं० श्री किशनलाल जी जैन, अलोद	छीपीटोला, आगरा
४४. पं० श्री हेमन्तकुमार काला, बम्बई	सनावद
४५. पं० डा० श्री कमलेश जैन, वाराणसी	वाराणसी
४६. पं० श्री शीतलचंद जैन, सागर	उदयपुर
४७. पं० श्री बच्चूलाल जैन, कानपुर	अहमदाबाद
४८. डा० श्री बाबूलाल जैन, अनुज, बण्डा	कलकत्ता
४९. डा० श्री कमलेशकुमार जैन, वाराणसी	कटनी
५०. पं० श्री मुन्नालाल जैन, ललितपुर	कलकत्ता
५१. पं० श्री बाबूलाल जैन, ऊंन (पावागिरि)	बिजौलिया
५२. पं० श्री नीरज जैन, सतना	कलकत्ता
५३. डा० श्री माणिकचंद जैन, सागर	बड़वाह
५४. पं० श्री दयाचंद जैन, अजयगढ़	वीठी
५५. पं० श्री पन्नालाल जैन, सागर	उदयपुर
५६. पं० श्री विनोदकुमार जैन, रजवास	खेकड़ा
५७. पं० श्री खेमचन्द जैन, सागर	भीलवाड़ा
५८. पं० श्री गोविन्ददास जैन, मवई	गढ़ाकोटा
५९. पं० श्री पुष्पेन्द्र कुमार जैन, उदयपुर	कोटा जंक्शन
६०. पं० श्री अमृतलाल जैन, दमोह	ऋषभांचल (गाजियाबाद)
६१. पं० श्री पदमचंद जैन, पानीपत	माडल टाउन- दिल्ली
६२. प्रतिष्ठाचार्य श्री मोतीचंद मार्तण्ड "ऋषभदेव"	अहमदाबाद
६३. पं० श्री कमलकुमार जैन, टीकमगढ़	देहरादून
६४. पं० श्री नरेन्द्रकुमार जैन, बरुआसागर	स्योहारा
६५. पं० श्री मनोरंजन शास्त्री, उदयपुर	दाहोद
६६. पं० श्री गुलाबचन्द जैन, कोटा	मेरठ (सदर)
६७. पं० श्री जमनालाल जैन, कटनी	जतारा
६८. पं० श्री धर्मचन्द जैन मोदी, छतरपुर	बोरिवली (बम्बई)
६९. पं० श्री जीवनलाल जैन, ललितपुर	प्रतापगढ़
७०. पं० श्री रतनचंद जैन, रहली	पानीपत
७१. पं० श्री हरिश्चंद जैन, मुरैना	मदनगंज किशनगढ़
७२. पं० श्री मुन्नालाल जैन, गंजबासौदा	कमलानगर, आगरा
७३. डा० श्री अशोककुमार जैन, लाडनूं	फीरोजाबाद
७४. पं० श्री अरुणकुमार जैन शास्त्री, सलेहा	जांजगीर
७५. पं० श्री माणिकचन्द जैन, निर्मलबांसा	चन्देरी
७६. पं० श्री ऋषभकुमार जैन नवापरा	राजिम
७७. पं० श्री दीपचन्द जैन, मुरैना	शाहपुर
७८. पं० श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, मुरैना	लाडनूं
७९. पं० श्री श्रेयांसकुमार जैन दिवाकर, सिवनी	छतरपुर
८०. पं० श्री जवाहरलाल जैन, भीण्डर	सहारनपुर
८१. पं० श्री पारसमल जैन, भोपाल	भोपाल
८२. पं० श्री जिनेन्द्रकुमार जैन, सासनी	दिल्ली
८३. पं० श्री नरेन्द्रकुमार जैन, रुड़की	अलीगढ़
८४. पं० श्री धर्मचन्द जैन, जेवर	बुलन्दशहर
८५. पं० श्री गोविन्ददास जैन कोठिया, आहारजी	कूचासेठ, दिल्ली
८६. पं० श्री श्रेयांसकुमार जैन, किरतपुर	शालीमार बाग- दिल्ली
८७. पं० श्री अरुणकुमार जैन शास्त्री, ब्यावर	ब्यावर
८८. पं० श्री रमेशचंद जैन मेनवार	गंजबासौदा
८९. पं० श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, कोटा	कोटा
९०. प्रोफेसर श्री टीकमचंद जैन, शाहदरा	दिल्ली
९१. पं० श्री मगनलाल जैन, कोटा	दादाबाड़ी, कोटा
९२. पं० श्री प्रेमचंद जैन, दुमदुमा	दिल्ली
९३. पं० श्री संतकुमार जैन, रजवांस	खेकड़ा
९४. डा० श्री सुशील जैन, मैनपुरी	मैनपुरी
९५. पं० श्री हुकुमचंद जैन, अहमदाबाद	शाहपुर (अहमदाबाद)
९६. पं० श्री राजकुमार जैन, आगरा	कुलेरा
९७. पं० श्री सुरूपचंद जैन, ललितपुर	बड़ा मल्हेरा
९८. प्रतिष्ठाचार्य श्री हंसमुख जैन धरियावद	धरियावद
९९. पं० श्री हरप्रसाद जैन, सिंधोली	सिंधोली
१००. पं० श्री महावीरप्रसाद जी जैन, सेठिया, बिजौलिया	झालरापाटन
१०१. पं० श्री कल्याणमल जैन, झालावाड़	भवानीमण्डी
१०२. पं० श्री जयकुमार जैन, टीकमगढ़	रेनबो विहार- मुजफ्फरनगर
१०३. पं. श्री निर्मल जैन, सतना	श्रवणबेलगोल
१०४. ब्रह्मचारी श्री जिनेश जैन, जबलपुर	जनरलगंज, कानपुर
१०५. पं० श्री सुखपाल जी जैन, देहरादून	गाजियाबाद
१०६. पं० श्री शीलचन्द जैन, बरुआसागर	अहमदाबाद
१०७. पं० श्री लादूलाल जी जैन, झांतला	झांतला
१०८. पं० श्री बाबूलाल जैन सेठिया, नैनवा	नैनवा
१०९. पं० श्री मनोहरलाल जैन, आग्रेकर	नागपुर
११०. पं० श्री प्रदीपकुमार जैन, धुले	बम्बई
१११. पं० श्री कोमलचंद जैन, लुहारिया	रेनवाल
११२. डा० श्री रमेशचंद जैन, ग्वालियर	खेकड़ा
११३. डा० श्री मूलचन्द जैन, सनावद	इन्दौर
११४. पं० श्री महेन्द्रकुमार जैन "महेश" ऋषभदेव	सागर
११५. पं० श्री हुकुमचंद जैन, साहित्याचार्य, ललितपुर	जबलपुर
११६. पं० श्री लक्ष्मणप्रसाद जैन, मड़ावरा	कोसीकलां
११७. पं० श्री जयकुमार जैन, साढूमल	महरौनी
११८. पं० श्री विनोदकुमार जैन, सहारनपुर	सहारनपुर
११९. पं० श्री दयाचन्द जैन, मैलोनी	दिल्ली
१२०. ब्रह्मचारी सन्तोषकुमार जैन, भोपाल	सिरसागंज
१२१. पं० श्री नन्हे भाई, सागर	अशोक विहार, दिल्ली

क्रमशः

(डा० श्रेयांसकुमार जैन)
महामंत्री
अ०भा० शास्त्रि-परिषद्
बड़ौत- २५०६११

आवास आबंटन समिति - एक रिपोर्ट

गोमटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव- ९३ पर आने वाले धर्मावलंबी बन्धुओं के लिये आवास आरक्षण का कार्य भारत के सभी हिस्सों में गत ६ सितम्बर से प्रारम्भ किया जा चुका है। स्वीस काटेज टेन्ट जो कि फर्नीचर के साथ बनाये जा रहे हैं, वे केवल एक हजार लगाना तय किये गये थे। १ माह में इनमें से दिनांक ७ अक्टूबर तक ८४० टेन्ट का आरक्षण हो चुका है। दिनांक ९ अक्टूबर की राष्ट्रीय बैठक में सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के पदाधिकारियों ने इनकी तादाद बढ़ाने का आग्रह किया। अतः कोशिश की जा रही है, किन्तु टेन्ट प्रदायकर्ता इस पर अपनी ओर से अधिक लगाने की स्थिति में नहीं है। टेन्टों का आरक्षण दिनांक ३० अक्टूबर तक किया जा सकेगा। इसके बाद आने वाले आरक्षित टेन्टों का उपलब्धि के आधार पर ही पसन्द अनुसार टेन्ट आवास हेतु मिल सकेंगे। समस्त धर्मप्रेमी जनता से अनुरोध है कि शीघ्र आरक्षण करवाकर परेशानी से मुक्त होवें। स्विज काटेज की अनुपलब्धता की स्थिति में ई.पी. टेन्ट, छोलदारी अथवा सामूहिक डोरमेट्री में ही स्थान उपलब्ध हो सकेगा।

- सुरेश गंगवाल
संयोजक- आवास आबंटन समिति

जैन गजट

प्रधान सम्पादक
श्यामसुन्दरलाल शास्त्री, फिरोजाबाद

सम्पादक
नरेन्द्रप्रकाश जैन, फिरोजाबाद

सह-सम्पादक
चेतन प्रकाश पाटनी, जोधपुर
मल्लीनाथ शास्त्री, मद्रास
महेन्द्र कुमार महेश शास्त्री, ऋषभदेव
डा. प्रमिला जैन, गुवाहाटी
सुलतान सिंह जैन, बुलन्दशहर
कपूरचन्द जैन, गुवाहाटी

सदस्यता-शुल्क
वार्षिक ५०/-, आजीवन ५०१/-
संरक्षक ११११/-
परम संरक्षक ५१०१/-
एक प्रति २/-

कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता
जैन गजट
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स,
ऐशबाग, लखनऊ-२२६ ००४
(उ.प्र.)
फोन नं. २६६९२५

लेख एवं कवितायें भेजने का पता
नरेन्द्रप्रकाश जैन
सम्पादक
१०४, नई बस्ती, फिरोजाबाद
(उ.प्र.)- २८३२०३

नोटः-
१- प्रकाशनार्थ समाचार लखनऊ ही भेजें।
२- पत्र व्यवहार जैन गजट कार्यालय, ऐशबाग, लखनऊ- २२६ ००४ (उ०प्र०) के पते पर ही करें।

आचार्य श्री कल्याण सागर जी महाराज

महासभाध्यक्ष श्री सेठी जी की श्रद्धांजलि

णमोकार वाले बाबा परम पूज्य आचार्य श्री १०८ कल्याण सागर जी महाराज के अनायास स्वर्गवास हो जाने से सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज को एवं अन्य लोगों को जो उनके सम्पर्क में थे, गहरा शोक पहुंचा है।

पूज्य आचार्य श्री कल्याणसागर जी जब अतिशय क्षेत्र अहिछत्र पार्श्वनाथ में णमोकार महामंत्र के जाप्य समारोह का समापन कर रहे थे तभी उन्होंने प्रगट कर दिया था कि वे अब ज्यादा दिन के मेहमान नहीं हैं। उनका समय निकट आ गया है।

मैंने जैसे ही यह सुना तो दिनांक २३.१०.९३ को श्री जम्बू कुमार जी को नीमच फोन करके पूरे समाचार ज्ञात किये।

आचार्य श्री के मन में समस्त जीव मात्र के प्रति असीम करुणा थी और वे उनके कल्याण के लिये चिंतित रहते थे।

जिस तरह से भी हो जो लोग उनके सम्पर्क में आये उनको उन्होंने कल्याण का मार्ग ही बताया।

आचार्य श्री ने वनस्पतियों पर णमोकार मंत्र के प्रभाव को विशेषज्ञों के सामने रखा।

जमुनियां कला में भी हमने देखा कि वनस्पतियों पर णमोकार मंत्र का अद्भुत प्रभाव पढ़ा। कुत्ता, सांप, कौआ एवं अन्य जानवरों पर उन्होंने इसका प्रयोग किया और इसका प्रभाव पढ़ा।

आचार्य श्री ने णमोकार मंत्र के प्रभाव से उन लोगों को उठाया जो चारित्र से गिर गये हैं। उनको उन्होंने इह लोक में सुखी करते हुये पर लोक में भी वे मोक्ष मार्ग के पथिक हों, ऐसा रास्ता उन सबको बताया।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा पर उनका असीम आशीर्वाद था। उनके जो कार्य आगमानुसार नहीं थे, उनके बारे में जब भी उनको बताता तो वे उसको सहज ही मान लेते थे। फिर भी बहुत सी चीजें विवाद के घेरे में थीं। परन्तु सब चीजों के पीछे आचार्य श्री के मन में केवल एक ही भावना थी कि प्राणी मात्र का कल्याण होवे। किसी के प्रति भी उनमें तनिक भी दुर्भावना नहीं थीं।

मेरा उनसे सम्पर्क जब वे मुनि बने थे तब से ही था। आचार्य श्री ने श्री महावीर जी में मुझसे एक विद्वान की व्यवस्था के लिये कहा था ताकि वह अध्ययन कर सकें। उनके मन में जैन आगम को जानने की उत्कंठा थी। उसके बाद चम्पापुर में आचार्य श्री ने अनशन कर दिया था कि जब तक णमोकार महामंत्र का प्रसारण रेडियो या टेलीविजन में नहीं होता उन्होंने अन्न का त्याग कर दिया था। मेरे पास भागलपुर से रात में ११ बजे फोन आया था व मैं प्रातःकाल प्लेन से पटना होते हुये भागलपुर पहुंचा और वहां पर आचार्य श्री से निवेदन किया और उन्होंने अनशन त्याग दिया।

इसी तरह आचार्य श्री ने आवासीय विद्यालय **"कल्याण निकेतन"** की योजना बनाई जिसकी नींव रखने के लिये आचार्य श्री ने मुझे आज्ञा दी। आचार्य श्री की इस बात से हमें बहुत खुशी हुई और सब लोगों के सानिध्य में मैंने नींव रखने का कार्य किया।

आचार्य श्री हमारी बिलारी (मुरादाबाद) स्थित शुगर मिल में पधारे जहां उन्होंने मजदूरों और किसानों को संबोधित किया। उन्होंने विशेषकर किसानों को कहा कि णमोकार मंत्र पढ़ करके पौधों में पानी डालते जायें तो वह पौधे अच्छी फसल देंगे एवं तुम्हारा सबका कल्याण होगा। आचार्य श्री ने बताया था कि इस तरह का कार्य मथुरा के पास हो रहा है।

आचार्य श्री मुरादाबाद के पास एक गांव में आहार से पूर्व बैठे थे कि किसी लड़के ने मधुमक्खी के छत्ते पर पत्थर मार दिया और सारी मधुमक्खियां आचार्य श्री के शरीर पर बैठ गईं। आचार्य श्री एक हीं जगह बैठे रहे एवं उस उपसर्ग को सहन करते रहे और बेहोश हो गयें। उन्होंने उस उपसर्ग को बड़े ही शांत भावों से सहा और वहां से बिलारी शुगर मिल के लिये प्रस्थान किया। जहां हमें आचार्य श्री की सेवा सुश्रुषा करने का मौका मिला।

उनका शरीर के प्रति कोई मोह नहीं था। वह अपने ध्यान में मग्न रहते थे।

हमें आचार्य श्री के सानिध्य में णमोकार महामंत्र का जाप्य करने का मौका तो पहले भी मिला था परन्तु पूरे विधान में रहने का मौका मुझे पहली बार अहिच्छत्र पार्श्वनाथ पर प्राप्त हुआ। उस अनुष्ठान में बैठने से हमें बहुत ही शांति प्राप्त हुई और वह अनुष्ठान बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। उस समय लोग यह कहने लगे कि बस से एक हजार यात्री को लेकर सम्मेदशिखर जी जाने से असुविधा होगी क्योंकि उस समय सारे भारत में कुछ बातों को लेकर संघर्ष चल रहा था परन्तु णमोकार मंत्र के प्रभाव से सब यात्री दर्शन करके सकुशल वापस आ गये।

इसी तरह से जमुनियां कला में णमोकार मंत्र के जाप्यानुष्ठान में बैठने का अवसर मिला और नीमच में भाई श्री घीसालाल जी जम्बू कुमार जी पाटनी का आतिथ्य ग्रहण किया जो कि मुझे अभी भी याद है। इस विधान में सौधर्म इन्द्र श्री घीसालाल जी बने थे। यह विधान बहुत ही विशाल था और बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें २४-२५ करोड़ के लगभग जाप्य हुई। मैं भी प्रतिदिन १०० से १५० माला णमोकार मंत्र की फेरता था।

और अनुष्ठानों की तरह इस जाप्य में जो लोग बैठे थे उनके स्पेशल रेल के द्वारा श्री सम्मेदशिखर जी की यात्रा करने का कार्यक्रम बनाया गया। जाप्य का समापन हो गया लेकिन ट्रेन का इंतजाम नहीं हो पाया। सब लोगों में उदासी छाई थी। रेलवे विभाग का कहना था कि स्पेशल ट्रेन के लिये ३ या ४ माह पूर्व मय फीस के बुकिंग करानी पड़ती है एवं वर्तमान में ४-५ ट्रेनें बुक हो चुकी हैं अतः ट्रेन उपलब्ध कराने में दो तीन महिने लग जावेंगे इसलिये आपको ५-६ माह के बाद ट्रेन मिल सकती है। इस बावत् दिल्ली में श्री माधवराव जी सिंधिया, श्री जाफर शरीफ एवं श्री रामलाल राही से सम्पर्क किया गया और इस कार्य का भार श्री गजराज जी गंगवाल (सुपुत्र- श्री पूनमचन्द जी गंगवाल) को दिया गया। और रेलवे बोर्ड ने १६ तारीख को ट्रेन देने की स्वीकृति दे दी परन्तु बम्बई से रेल विभाग की खबर आई कि उनके पास ट्रेन उपलब्ध नहीं है परन्तु दिल्ली का दबाव रहा कि यदि आपको नौकरी प्यारी है तो ट्रेन उपलब्ध करा देवें और वही हुआ। सारी नई बोगियां कारखाने से निकलवा कर लाई गईं एवं ट्रेन उपलब्ध कराई गई। अब ट्रेन छूट नहीं रही थी क्योंकि स्टेशन मास्टर लगभग ४ लाख रुपये किराये का बम्बई से नीमच का मांग रहा था यद्यपि नीमच सम्मेदशिखर जी जाने का किराया दे दिया गया था अतः बम्बई से नीमच का किराया देने का कोई औचित्य नहीं था। मैं महाराज श्री के पास जमुनियां पहुंचा तो महाराज श्री ने कहा कि जब यात्री ट्रेन में बैठ चुके है तो ट्रेन को रवाना होना ही चाहिये। आचार्य श्री ने कहा कि हमारे संघ में तीन गाड़ियां हैं, उन्होंने श्री केसरीमल दोषी को कहा कि इनके पेटे रुपये देकर ट्रेन को रवाना कर दें और वापस आने पर इनको बेचकर अपना रुपया वसूल कर लें। आचार्य श्री ने मुझे कहा कि आप णमोकार महामंत्र का ध्यान करते हुये रेलवे स्टेशन जाईये, काम हो जावेगा। मैं ३.३० बजे नीमच स्टेशन पहुंचा और स्टेशन मास्टर से संपर्क किया। स्टेशन मास्टर ने मुझे नियम की किताब दिखाई। सब उसी पन्ने को पढ़ते थे उसमें लिखा था कि कोई अन्य पन्ना देखें जिसमें इसका स्पष्टीकरण दिया हुआ है। मैंने उस पन्ने को देखा तो उसमें स्पष्ट लिखा था कि यदि कोई व्यक्ति स्पेशल ट्रेन का उपयोग नहीं करता है तो उसे जहां से ट्रेन रवाना होकर जहां तक आई है उसका किराया देना पड़ेगा। इस प्रकार ४ लाख की मांग निरस्त हो गई और ट्रेन में बैठे २००० हजार यात्री खुश होकर जयकार करने लगे।

इस ट्रेन के कोटा के पास के एक जंक्शन पर पहुंचने पर ३ डिब्बे और जुड़े। हम लोगों ने बताया कि हम लोग १४ डिब्बों से ही काम चला लेंगे, नया किराया नहीं देंगे। स्टेशन मास्टर ने कहा कि किराया नहीं चाहिये। इस प्रकार ३ डिब्बे और जुड़ जाने से सब यात्रियों को भी सुविधा हो गई पूरी यात्रा में कोई कष्ट नहीं हुआ।

इस यात्रा में कई अद्भुत घटनाये हुई। जिससे हमें काफी सहयोग मिला। ट्रेन जब पारसनाथ पहुंची उसे समय रात्रि के ८.३० बजे थे। हमें लेने के लिये श्री दिलीप गंगवाल (सुपुत्र श्री पूनमचन्द जी गंगवाल) आये। उनको देखकर बहुत खुशी हुई। उन्होंने लगभग ४०-५० बस टेम्पो आदि करके कुल ३ घण्टे में सब यात्रियों को श्री सम्मेदशिखर जी (मधुबन) पहुंचा दिया और सभी यात्रियों ने पहाड़ की वंदना २ दिन में पूरी कर ली।

श्री दिलीप गंगवाल ने बहुत बड़ी व्यवस्था भोजन की की एवं सब यात्रियों का वापस खूब अच्छी तरह ट्रेन में वापस बिठाया।

श्री दिलीप गंगवाल की सेवाओं की सभी यात्रियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना की कि वह आगे जाकर अपने पिताजी की तरह जैन समाज के महान नेता बनेंगे।

परम पूज्य आचार्य श्री कल्याणसागर जी महाराज को समस्त दिगम्बर जैन समाज की यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम उनके बताये सब कार्यों को पूरा करें और उनके बताये मोक्ष मार्ग पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति करें।

मेरे पास उनकी दी हुई एक चांदी की माला है जिसे मैं रात-दिन जपता हूं एवं आचार्य श्री को याद करता हूं।

हम सब महासभा परिवार को उनके स्वर्गवास होने से उत्यंत दुःख हुआ है। हम सब प्रण लेते हैं कि जो भी कार्य उन्होंने हमें बताये हैं उनको हम अपनी शक्ति अनुसार पूरा करें।

आचार्य श्री के समस्त अनुयायियों से निवेदन है कि वह आचार्य श्री के द्वारा बताये गये णमोकार मंत्र का जाप्य जैसा बताया है वैसा करते रहें एवं उसके प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन अर्पण कर देवें।

- निर्मल कुमार सेठी
अध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

जैन गज़ट

सेवा धर्म समाज की, आगम के अनुकूल।
यह पुनीत उद्देश्य है, जैन गज़ट का मूल।।

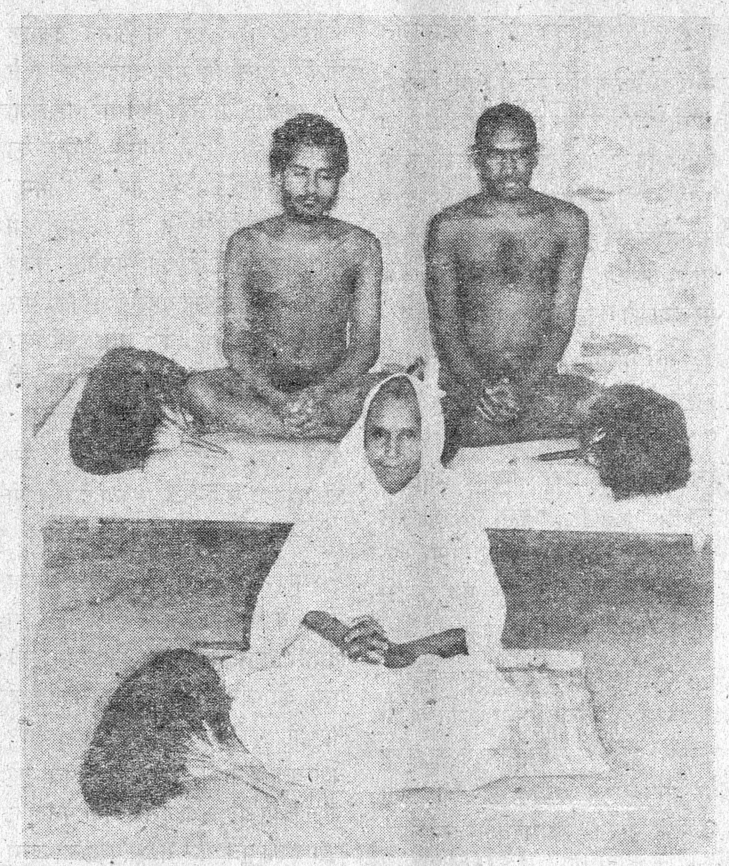

पावन वर्षायोग

पारसोला (उदयपुर)। पूज्य आचार्य श्रीकुंथुसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री कर्मविजयनन्दी जी, मुनि श्री गुणधरनन्दी जी एवं आर्यिका श्री कोमल श्री माताजी का वर्षायोग महती धर्मप्रभावना पूर्वक हो रहा है। २० सितम्बर को यहां मुनि श्री गुणधरनन्दी जी की जन्म जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर गुणोदय युवा मण्डल ने "पुरुवार भील से भगवान महावीर" नाटक का मंचन किया।

- लक्ष्मीलाल बगीया

तीर्थंकरवाणी मासिक पत्र का विमोचन

अहमदाबाद। समन्वय ध्यान साधना केन्द्र के मुखपत्र "तीर्थंकरवाणी" की विमोचन विधि भव्य समारोह में केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री श्री विद्याचरण जी शुक्ल के करकमलों से दि० २१.९.९३ को हुई।

अतिथि विशेष के रूप में भाजपा के सांसद श्री केलाश नारायण सारंग पधारे। इस अवसर पर म०प्र० के वरिष्ट पत्रकार, सांसद, विधायक, सामाजिक नेता एवं विशाल संख्या में जैनाजैन जनसमूह उपस्थित था। अध्यक्ष पद श्री महेश जैन ने सम्हाला।

प्रधान संपादक डा० शेखरचन्द्र ने केन्द्र एवं पत्रिका के संबंध में बताते हुए उसके समन्वयवादी दृष्टिकोण एवं धार्मिक सहिष्णुता को समझाया। प्रबंध संपादक सुनील जैन ने उसके प्रचार-प्रसार की महत्ता समझाई। डा० जीवनलालजी ने स्वागत प्रवचन किया एवं प्रबंधसंरक्षक सेठ मोतीलाल जी ने आभार व्यक्त किया।

- डा० शेखरचन्द्र जैन

अनादि तीर्थ - अयोध्या

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

इस मध्यलोक में असंख्यात् द्वीप समुद्र हैं। उनमें सर्वप्रथम द्वीप का नाम जंबूद्वीप है। इसमें दक्षिण दिशा में भरतक्षेत्र के छह खंडों में एक आर्य खंड है। इसमें अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के द्वारा छह काल परिवर्तन होते रहते हैं, सुषमा सुषमा, सुषमा और सुषमादुःषमा इन तीन कालों में उत्तम, मध्यम और जघन्य भोगभूमि की व्यवस्था रहती है। आगे के दुःषमासुषमा, दुःषमा और दुःषमादुःषमा इनमें अर्थात् चौथे, पांचवे और छठे कालों में कर्मभूमि की व्यवस्था रहती है। इस चालू अवसर्पिणी में कुछ अघटित घटनाओं के हो जाने से इसे "हुंडावसर्पिणी" नाम दिया है। यह असंख्यातों अवसर्पिणी के बाद आती है।

जब तृतीय काल में पल्य का आठवां भाग शेष रह गया था तब क्रम से प्रतिश्रुति, सन्मति, क्षेमंकर, क्षेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विमलवाहन, चक्षुष्मान्, यशस्वी, अभिचंद्र, चन्द्राभ, मरूदेव, प्रसेनजित् और नाभिराज ये चौदह कुलकर हुये हैं। भोगभूमि में युगलिया जन्म लेते हैं और वे ही पतिपत्नी का जीवन व्यतीत करते हैं। बारहवें मरुदेव कुलकर के प्रसेनजित् नाम के अकेले पुत्र हुये थे। पुनः पिता ने अपने पुत्र का कुलवती कन्या के साथ विवाह किया था।[१] ऐसे ही प्रसेनजित् के एक अकेले नाभिराय हुये थे। इन्द्र ने नाभिराज का विवाह मरुदेवी कन्या के साथ कराया था।[२] हरिवंशपुराण में मरूदेवी को शुद्धकुल की कन्या माना है।

जब कल्पवृक्षों का अभाव हो गया तब नाभिराय और मरुदेवी से अलंकृत पवित्र स्थान में इन्द्र ने एक नगरी की रचना करके उसका नाम "अयोध्या" रख दिया। इसके "साकेता, विनीता और सुकोशला" ऐसे तीन नाम और हैं। वैदिक ग्रंथों के रूद्रयामल ग्रंथ में इसे विष्णु भगवान का मस्तक माना है।[३]

हरिवंशपुराण के अनुसार महाराज नाभिराज का कल्पवृक्ष रूप प्रासाद-भवन बना रह गया। ये इक्यासी खन का ऊंचा था इसका नाम "सर्वतोभद्र" था। इसी भवन में भगवान ऋषभदेव ने जन्म लिया था।

अनादि तीर्थ अयोध्या-

अनादिकाल से इस अयोध्या में अनंत-अनंत तीर्थंकर जन्म ले चुके हैं। क्योंकि प्रत्येक चतुर्थकाल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर यहीं- अयोध्या में ही जन्म लेते हैं और आगे भविष्यकाल में भी भरतक्षेत्र की प्रत्येक चौबीसी यहीं पर होवेंगी। वर्तमान में हुंडावसर्पिणी नाम के काल दोष से यहां पर ऋषभदेव अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनंतनाथ ये पांच तीर्थंकर ही जन्में हैं। शेष उन्नीस तीर्थंकरों ने अन्यत्र जन्म लिया है। फिर भी यह अनादिकाल से है और आगे अनंत काल तक रहेगी। अर्थात् छठे काल के बाद जब प्रलय आता है तब यहां भरतक्षेत्र के आर्यखंड की सारी रचना जलकर भस्म हो जाती हैं। फिर भी पुनः इसी भूमि पर "अयोध्या" नगरी की रचना की जाती है। यह रचना इन्द्र की आज्ञा से देवगण करते हैं।

भगवान ऋषभदेव-

छह माह बाद "सर्वार्थसिद्धि' विमान से च्युत होकर अहमिंद्र का जीव यहां माता मरूदेवी के गर्भ में आयेंगे। ऐसा जानकर इन्द्र ने कुबेर को अयोध्या में माता के आंगन में रत्नों की वर्षा करने के लिये आज्ञा दी थी। आषाढ़ कृष्णा द्वितीया के दिन अहमिंद्र का जीव माता के गर्भ में आया था तब इन्द्रों ने भगवान का गर्भ महोत्सव मनाया था। श्री, ह्री, धृति आदि देवियों ने माता की सेवा की थी।

चैत्र कृष्ण नवमी के दिन भगवान का जन्म हुआ था। तब इन्द्रों के आसन कंपित हुये थे। इन्द्रगण ने असंख्य देवों के साथ मिलकर भगवान का जन्माभिषेक सुमेरू पर्वत की पांडुक शिला पर किया था और जन्मजात शिशु का नाम "वृषभदेव" या "ऋषभदेव" रखा था। भगवान के आदिनाथ, आदीश्वर, पुरुदेव, नाभिनंदन और आदिब्रह्मा ऐसे नाम भी प्रसिद्ध हुये हैं।

इन्द्र की आज्ञा से अनेक देवगण तीर्थंकर बालक के साथ क्रीड़ा करते रहते थे। भगवान के युवा होने पर महाराजा नाभिराज ने उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा तब भगवान ने "ओम्" कहकर स्वीकृति दे दी। तब श्री नाभिराजा ने इन्द्र की अनुमति लेकर कच्छ, महाकच्छ की बहनें यशस्वती और सुनंदा कन्याओं के साथ तीर्थंकर ऋषभदेव की विवाह विधि सम्पन्न की थी। तभी इन्द्रों ने और देवों ने मिलकर बहुत बड़ा उत्सव मनाया था। उस विवाहोत्सव में मनुष्य तो क्या देवों ने भी बहुत ही आनंद का अनुभव किया था।

महारानी यशस्वती ने चैत्र कृष्णा नवमी के दिन ही "भरत" पुत्र को जन्म दिया था पुनः वृषभसेन आदि निन्यानवें पुत्रों को जन्म दिया था। इसके बाद "ब्राह्मी" पुत्री को जन्म दिया था अर्थात् यशस्वती रानी ने सौ पुत्र एक पुत्री को जन्म दिया था। तथा दूसरी रानी सुनंदा ने "बाहुबली पुत्र और सुंदरी पुत्री को जन्म दिया था। इनमें से "भरत" प्रथम चक्रवर्ती और बाहुबली प्रथम कामदेव हुये हैं।

विद्याओं का उद्भव स्थल-

किसी समय तीर्थंकर ऋषभदेव ने किशोरावस्था को प्राप्त ब्राह्मी और सुंदरी पुत्री को "अ आ" आदि अक्षर विद्या एवं इकाई, दहाई आदि गणित विद्या पढ़ाकर विद्या अध्ययन को जन्म दिया। तभी से "अ आ" आदि अक्षर विद्या को ब्राह्मी लिपि कहने की परंपरा हो गई थी। भगवान ने अपने भरत आदि पुत्रों को भी संपूर्ण विद्याओं और कलाओं में निपुण बना दिया था। अतः सर्वविद्याओं का उद्भव स्थल यह अयोध्या ही है।

जीने की कला का उपदेश-

भोगभूमि समाप्त होने वाली थी तभी महौषधि आदि कल्पवृक्ष फल नहीं देने वाले हो गये, तब प्रजा के लोग क्षुधा-तृषा से व्याकुल हो महाराजा नाभिराज की आज्ञा से भगवान के समीप आये और जीने का उपाय जानने के लिए प्रार्थना करने लगे- तभी प्रजा के दीन वचन सुनकर भगवान ने अपने अवधिज्ञान से पूर्व विदेह- पश्चिम विदेह की सारी व्यवस्था जानकर और यहां भी ऐसी व्यवस्था बनाना उचित है ऐसा चिंतन कर इन्द्र का स्मरण किया। उसी क्षण सौधर्म इन्द्र अनेक देवों के साथ उपस्थित हो गया।

भगवान को नमस्कार कर उनकी इच्छानुसार उसने मांगलिक विधिपूर्वक सर्वप्रथम अयोध्या नगरी के मध्य में एक जिनमंदिर की रचना करके नगरी के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर ऐसी चारों दिशाओं में भी एक-एक जिनमंदिर बना दिये। पुनः कौशल, काशी आदि महादेश और अयोध्या, हस्तिनापुरी, उज्जयिनी, बनारस आदि नगरियों को रचकर गांव, खेड़ा, वन, उद्यान आदि की रचना कर दी। इस प्रकार सौधर्म इन्द्र ने अनेक देश, नगर आदि को बनाकर यत्र-तत्र रहते हुये जनों को भगवान की आज्ञानुसार यथायोग्य स्थानों में बसाकर प्रभु की आज्ञा ले अपने स्वर्गधाम को चला गया।

तत्पश्चात् भगवान ने प्रजा को असि, मषि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और विद्या इन छह क्रियाओं का उपदेश देकर भोजन बनाने आदि की विधि बताई और खाने योग्य, न खाने योग्य धान्य, फल आदि बताकर भूख प्यास दूर करने की शिक्षा दी। अनंतर क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण स्थापित कर उन-उनके योग्य रक्षा करना, व्यापार करना, सेवा करना आदि कर्तव्यों का उपदेश दिया। वह तिथि आषाढ़ कृष्णा प्रतिपदा थी उसी दिन कर्मभूमि की सृष्टि का प्रारंभ हुआ था। तभी से प्रजा ने भगवान को युगादिपुरुष, युगस्रष्टा, ब्रह्मा, विधाता आदि अनेक नामों से पुकारा था।

राज्य व्यवस्था-

किसी समय स्वर्ग से इन्द्र ने आकर महाराजा नाभिराज की अनुमति लेकर भगवान का राज्याभिषेक कर दिया। उस समय "इस भरतक्षेत्र में महामुकुटबद्ध राजाओं के अधिपति तीर्थंकर ऋषभदेव हैं" ऐसा कहकर उनके मस्तक पर मुकुट बांध दिया। इन्द्र ने उस समय महामहोत्सव मनाया था।

तत्पश्चात् कर्मभूमि में न्याय करने वाले राजाओं की आवश्यकता समझकर भगवान ने चार महाभाग्यशाली क्षत्रियों को बुलाकर राज्याभिषेक विधि से उन्हें महामाण्डलिक राजा बना दिया। सोमप्रभ, हरिकांत, श्रीधर और मधवा उनके नाम थे एवं कुलवंश, हरिवंश, नाथवंश और उग्रवंश, क्रम से ये उनके वंश थे। भगवान ने प्रजा को इक्षुरस निकालने की विधि बतलाने से सभी के द्वारा वे "इक्ष्वाकु" कहलाये थे। अतः भगवान इक्ष्वाकुवंशी माने गये हैं। भगवान के पुत्र भरत चक्रवर्ती के बड़े पुत्र का नाम अर्ककीर्ति होने से यहीं से अर्क नाम से सूर्यवंश चला है।

भगवान की दीक्षा-

एक समय इन्द्र ने राज्य सभा में नीलांजना अप्सरा का नृत्य प्रारंभ किया था। उसी मध्य नीलांजना की आयु समाप्त होते ही वह विलीन हो गई और उसी क्षण इन्द्र ने दूसरी अप्सरा उपस्थित कर दी, नृत्य बराबर चालू रहा किंतु भगवान ने अवधिज्ञान से यह सब जान लिया अतः वे उसी क्षण संसार शरीर और भोगों से विरक्त हो गये। भरत को राज्य देकर अन्य पुत्रों को यथायोग्य राज्य देकर वन में जाने के लिये तैयार हुये कि लौकांतिक देवों ने आकर प्रभु के वैराग्य की अनुमोदना की। सौधर्म इन्द्र आदि देवगण आ गये।

भगवान इन्द्र द्वारा लाई सुदर्शना पालकी में बैठकर अयोध्या से बाहर निकले। जहां भगवान ने दीक्षा ली थी उसे "प्रयाग"[४] इस नाम से जाना जाता है। भगवान ने सर्व वस्त्राभूषण त्याग कर अपने केशों को उखाड़ फेंक दिया और "नमः सिद्धेभ्यः" कहकर दैगंबरी दीक्षा ले ली। पुनः षट्मास का योग लेकर ध्यान में लीन हो गये।

प्रभु की देखादेखी उन्हीं का अनुसरण करते हुये चार हजार राजाओं ने भी मुनि दीक्षा लेकर नग्न अवस्था धारण कर ली। किंतु कुछ ही दिनों में वे भूख-प्यास से व्याकुल हो झरने का पानी पीने लगे और वन के फल खाने लगे तब वनदेवता ने **"आप लोगों को दिगंबरी मुनिमुद्रा में यह स्वच्छंद प्रवृत्ति करना उचित नहीं है।"** ऐसा कहकर मना किया- तब इन लोगों ने दिगंबर वेष छोड़कर वल्कल आदि धारण कर नाना वेष बना लिये।

आहारचर्या-

भगवान ऋषभदेव छह महिने बाद योग समाप्त कर इस युग मुनिचर्या बतलाने के लिये आहार हेतु निकले किंतु किसी को दिगंबर जैन मुनि की आहार विधि का ज्ञान न होने से भगवान के छह माह और व्यतीत हो गये। पुनः हस्तिनापुर पहुंचते ही वहां के राजा सोमप्रभ के भ्राता श्रेयांसकुमार को भगवान के श्रीचरणों में नमस्कार करते ही उन्हें आठ भव पूर्व का जातिस्मरण हो गया तब राजकुमार श्रेयांस ने नवधाभक्ति करके भगवान को इक्षुरस का आहार दिया। देवों ने पंचाश्चर्य वृष्टि की। वह दिन वैशाख शुक्ला तृतीया थी जो कि आज भी "अक्षयतृतीया" के नाम से प्रसिद्ध है।

भगवान को केवलज्ञान-

एक हजार वर्ष तक तपश्चरण करते हुये भगवान ने एक दिन शुक्लध्यान के बल से घातिया कर्मों को नष्ट कर केवलज्ञान प्रगट कर लिया। तभी कुबेर ने आकर अर्धनिमिष में आकाश में अधर समवसरण की रचना कर दी। उसी समय पुरिमतालपुर के राजा वृषभसेन-भगवान के तृतीया पुत्र वहां आये और भगवान से जैनेश्वरी दीक्षा लेकर भगवान के प्रथम गणधर हो गये।

राजा भरत ने उसी क्षण तीन समाचार विदित किये। भगवान को केवलज्ञान, चक्ररत्न की उत्पत्ति और पुत्ररत्न की प्राप्ति। सर्वप्रथम राजा भरत ने भगवान के केवलज्ञान की पूजा करके दिव्यध्वनि को सुना, पुनः चक्ररत्न की पूजा कर पुत्र का जन्मोत्सव मनाया।

इधर जो चार हजार राजा दीक्षित होकर स्वेराचारी बन गये थे। उनमें से मरीचिकुमार-भरत के पुत्र को छोड़कर शेष सभी भगवान के समवसरण में आकर पुनः मुनिदीक्षा लेकर स्वर्ग-मोक्ष के पात्र बन गये किंतु मरीचिकुमार अनेक पाखंडमतों का प्रवर्तन करता ही रहा।

भगवान का निर्वाण-

जब तृतीयाकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ मास बाकी थे। तब भगवान ऋषभदेव सभी अघातिया कर्मों का नाश करके कैलाशपर्वत से मोक्ष चले गये। तभी इन्द्रों ने आकर तीन अग्नि स्वरूप तीन कुंडों की स्थापना करके भगवान के शरीर का संस्कार किया और महामहोत्सव मनाकर स्वस्थान चले गये।

जैन सिद्धांत के अनुसार मोक्ष गये जीवों का पुनः अनंत अनंत काल के बाद भी संसार में आगमन-पुनरागमन नहीं होता है। वे भगवान अनंत-अनंत काल तक अनंत सुख का अनुभव करते रहते हैं। वे जन्म-मरण से रहित ज्ञानशरीरी अनंतगुणों के पुंज हो जाते हैं।

भगवान ऋषभदेव एक दृष्टि में-

१. जन्मभूमि- अयोध्या, दीक्षा स्थल- प्रयाग, केवलज्ञान स्थल- पुरिमतालपुर का उद्यान, मोक्ष स्थान- कैलाशपर्वत।

२. पिता- नाभिराज, माता- मरूदेवी, पत्नी- यशस्वती, सुनंदा, पुत्र- भरत-बाहुबली आदि १०१, पुत्री- ब्राह्मी, सुंदरी।

३. शरीर की ऊंचाई- दो हजार हाथ, आयु- चौरासी लाख वर्ष पूर्व, वर्ण- स्वर्णसदृश, वंश-इक्ष्वाकु, चिन्ह- बैल।

४. गर्भ तिथि- आषाढ़ कृष्णा द्वितीया, जन्मतिथी और दीक्षा तिथि- चैत्र कृष्णा नवमी, केवलज्ञान तिथि- फाल्गुन कृष्णा ग्यारस, निर्वाण तिथि- माघ कृष्णा चतुर्दशी।

५. समवसरण में गणधर- ८४, मुनि- ८४०००, आर्यिका- ३५००००, श्रावक- ३००००, श्राविका- ५००००।

इक्ष्वाकुवंश में मुक्तिगमन की परंपरा-

भगवान के मोक्षगमन के बाद चक्रवर्ती भरत मोक्ष गये हैं। पुनः उनके पुत्र अर्ककीर्ति ने दैगंबरी दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया है। इस प्रकार इस अयोध्या के चौदह लाख राजा लगातार- अपने-अपने पुत्रों को राज्य दे देकर मोक्ष गये हैं।

चक्रवर्ती भरत-

राजा भरत ने चक्रवर्ती होकर छहखंड पृथ्वी का एकच्छत्र शासन किया था। इन्होंने ब्राह्मण वर्ण की स्थापना की थी। ये नवनिधि और चौदह रत्नों के स्वामी थे। दीक्षा लेते ही इन्हें अंतर्मुहूर्त ४८ मिनट के अंदर में ही केवलज्ञान प्रगट हो गया था इन्होंने भी कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया है।

कामदेव बाहुबली-

श्री बाहुबली ने भरत को पराजित कर पुनः विरक्त हो जैनेश्वरी दीक्षा ले ली। वन में जाकर एक वर्ष का योग

शेष पेज ५ पर

अयोध्या में महामस्तकाभिषेक एवं पंचकल्याणक के समय आवास व भोजन की सुविधा

अयोध्या में आयोजित भगवान श्री ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक एवं पंच कल्याणक के समय अयोध्या आने वाले महानुभावों के लिये आवास की समुचित व्यवस्था की जा रही है जिसमें सम्पूर्ण महोत्सव में दिनांक १२ से २४ फरवरी तक १४ दिन का पंचकल्याणक महामस्तकाभिषेक के लिए १६ फरवरी से २५ फरवरी तक एक सप्ताह का तथा केवल महामस्तकाभिषेक के लिए आने वालों का २३ फरवरी से २५ फरवरी तक तीन दिन का इस प्रकार तीन प्रकार का आरक्षण किया जायेगा। डीलक्स कमरा, बड़ा कमरा, छोटा कमरा, टीन चद्दर का कमरा जिसमें ताला बन्द किया जा सके, स्विस कार्टेज, ई.पी.टेन्ट, छोलदारी, डारमेंटरी आदि का रियायती शुल्क कम से कम १००/- रु० एवं अधिकतम ७००/- रु० तक रहेगा। विस्तृत विवरण की शुल्क तालिका ३० नवंबर तक घोषित कर दी जायेगी। जो महानुभाव आवास का आरक्षण कराना चाहते हैं वे १००/- रु० एडवांस देकर आवेदन कर सकते हैं। एडवांस राशि केन्द्रीय कार्यालय अयोध्या, प्रांतीय कार्यालय दिल्ली अथवा अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आरक्षण का एडवांस देते समय अपना पूरा पता, टेलीफोन नम्बर, यात्री संख्या उपरोक्त दो सप्ताह के लिये या एक सप्ताह के लिए या तीन दिन के लिए यह विवरण अंकित करा देवें। आरक्षण की एडवांस राशि के साथ आवेदन पत्र प्राप्त होने पर वांछित आरक्षण करके शेष राशि भेजने हेतु सूचना दी जायेगी।

भोजन सुविधा-

१३ फरवरी से २४ फरवरी, १९९४ तक महोत्सव के दिनों में आने वाले यात्रियों के लिये कच्चे भोजन व पक्के भोजन की व्यवस्था की जायेगी। जिसका रियायती शुल्क कच्चा भोजन ६/- रु० प्रति थाली तथा ५/- रु० प्रति थाली पक्का भोजन रखा जायेगा। कच्चे भोजन में रोटी, दाल, चावल, सब्जी तथा पक्के भोजन में पूड़ी-कचोड़ी, पुलाव, सब्जी आदि रहेगा।

संक्षिप्त समाचार

मैनवां (बूंदी)। क्षमावाणी पर्व पर छबड़ा रेल दुर्घटना एवं महाराष्ट्र में भयंकर भूकम्प से मरने वालों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

- जीवन्धर कुमार सेठिया

आरा, २ अक्टूबर। स्थानीय श्री जैन कन्या पाठशाला में प्रातः ८ बजे गांधी जयन्ती का उत्सव आयोजित किया गया।

अनादि तीर्थ . . .

पेज ४ का शेष

लेकर ध्यान में लीन हो गये। उनके मन में एक यह विकल्प था कि भरत को मेरे द्वारा कष्ट हो गया है अतः उन्हें निर्विकल्प ध्यान नहीं हो सका फिर भी ये भावलिंगी, निःशल्य, महामुनि थे, मनः पर्ययज्ञानी थे। व नाना ऋद्धियों से सहित थे। एक वर्ष बाद भरत ने आकर इनकी पूजा की ओर ये केवलज्ञानी बन गये। इनके शल्य नहीं थी ऐसा महापुराण में वर्णित है। एक वर्ष के ध्यान में इनके शरीर में बेलें लिपट गई थीं, सर्पों ने बामी बना ली थीं। अतः इनकी प्रतिमा में आज भी ये चिन्ह बने दिखते हैं। इन्होंने भी कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया है।

ऐसे ही भगवान ऋषभदेव के वृषभसेन आदि सभी पुत्रों ने मोक्ष प्राप्त किया है। ब्राह्मी-सुंदरी आर्यिका दीक्षा लेकर स्त्रीपर्याय का छेदकर स्वर्ग गई थीं पुनः वहां से च्युत होकर मनुष्य पर्याय में दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त कर चुकी हैं।

इसी तरह भरत सम्राट के नौ सौ तेईस पुत्र जन्म से गूंगे थे। इन्होंने पहले कभी त्रसपर्याय पाई ही नहीं थी। ये भगवान के समवशरण में पहुंचे। बोल पड़े, वहां पर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर तपश्चरण के बल से कर्मों को नष्ट कर मोक्ष को प्राप्त हो चुके हैं।

भगवान अजितनाथ-

१. **जन्मभूमि-** अयोध्या, मुक्तिस्थल- सम्मेदशिखर पर्वत,

२. **पिता-** जितशत्रु, माता- विजया,

३. **शरीर की ऊंचाई-** अठारह सौ हाथ, आयु- बहत्तर लाख पूर्व वर्ष, वर्ण- स्वर्णसदृश, वंश- इक्ष्वाकु, चिन्ह- हाथी।

४. **गर्भ-** ज्येष्ठ कृ० अमावस्या, जन्म- माघ शु. १०, दीक्षा- माघ शु. ९, केवलज्ञान- पौष शु. ११, निर्वाण- चैत्र शु. ५।

५. **समवसरण में गणधर-** ९०, मुनि- १०००००, आर्यिका- ३२००००, श्रावक- ३०००००, श्राविका- ५०००००।

. इनके गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान ये चारों कल्याणक आयोध्या में ही हुये हैं।

भगवान अभिनंदननाथ-

१. **जन्मभूमि-** अयोध्या, मुक्तिस्थल- सम्मेदशिखर पर्वत।

२. **पिता-** राजा स्वयंवर, माता- सिद्धार्था।

३. **शरीर की अवगाहना-** चौदह सौ हाथ, आयु- पचास लाख पूर्व वर्ष, वर्ण- स्वर्ण सदृश, वंश- इक्ष्वाकु, चिन्ह- बंदर।

४. **गर्भ तिथि-** वैशाख शु. ६, जन्म- माघ शु. १२, दीक्षा- माघ शु० १२, केवलज्ञान- पौष शु. १४, निर्वाण- वैशाख शु. ६।

५. **समवसरण में गणधर-** १०३, मुनि- ३०००००, आर्यिका ३३०६००, श्रावक- ३०००००, श्राविका- ५०००००।

भगवान सुमतिनाथ-

१. **जन्मभूमि-** अयोध्या, मुक्ति स्थल- सम्मेदशिखर पर्वत।

२. **पिता-** मेघरथ, माता- सुमंगला।

३. **शरीर की अवगाहना-** बारह सौ हाथ, आयु- चालीस लाख पूर्व वर्ष, वर्ण- स्वर्ण सदृश, वंश- इक्ष्वाकु, चिन्ह- चकवा।

४. **गर्भतिथि-** श्रावण शु.२, जन्म- चैत्र शु. ११, दीक्षा- वैशाख शु. ९, केवलज्ञान- चैत्र शु. ११, निर्वाण- चैत्र शु. ११,

५. **समवसरण में गणधर-** ११६, मुनि- ३२००००, आर्यिका- ३३००००, श्रावक- ३०००००, श्राविका- ५०००००,

भगवान अनंतनाथ-

१. **जन्मभूमि-** अयोध्या, मुक्तिस्थल- सम्मेदशिखर पर्वत

२. **पिता-** सिंहसेन, माता- जयश्यामा।

३. **शरीर की अवगाहना-** २०० हाथ, आयु- ३० लाख वर्ष, वर्ण- स्वर्णसदृश, वंश- इक्ष्वाकु, चिन्ह- सेही,

४. **गर्भतिथि-** कार्तिक कृ० १, जन्म- ज्येष्ठ कृ. १२, दीक्षा- ज्येष्ठ कृ. १२, केवलज्ञान- चैत्र कृ. अमावस्या, निर्वाण- चैत्र कृ. अमावस्या।

५. **समवसरण में गणधर-** ५० मुनि- ६६०००, आर्यिका- १०८०००, श्रावक- २०००००, श्राविका- ४०००००,

इस प्रकार पांच तीर्थंकरों का संक्षेप से वर्णन किया गया है।

१. हरिवंशपुराण सर्ग ७,

२. महापुराण पर्व १२,

३. एतद् ब्रह्मविदो वदन्ति मुनयोऽयोध्यापुरी मस्तकम्।

४. पद्मपुराण पर्व ३

५. हरिवंशपुराण सर्ग

स्वास्थ्य लाभ कामना

आरा। जैन महिलादर्श की सम्पादिका सुश्री शशिप्रभा जी शशांक आफिस कार्यों को सम्पादित कर घर लौटीं कि अचानक गिर जाने से उनके दाहिने पैर के घुटने की हड्डी टूट गई। पैर अभी दो माह के लिये टैक्शन पर है।

- चन्द्रानी जैन

जैन गजट परिवार सुश्री शशिप्रभा जी शशांक के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता है।

- प्रकाशक

कलकत्ता में दशलक्षण व्रतकर्ताओं का अभिनन्दन हुआ

कलकत्ता २ अक्टूबर ९३। परम पावन पर्वराज पर्यूषण के अवसर पर समस्त दशलक्षण व्रत कर्ताओं का सामूहिक सामाजिक अभिनन्दन समस्त जैन समाज की ओर से श्री दिगम्बर जैन नवयुवक मण्डल के तत्वाधान में श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर जी के सभागार में सानन्द सम्पन्न हुआ। इस वर्ष यहां लगभग ६२ व्यक्तियों ने दस दिन तक निराहार रहकर आत्म कल्याण किया।

यह समारोह पं० मुन्नालाल जी शास्त्री, ललितपुर, श्री नीरज जी जैन-सतना के सानिध्य में बड़ा मंदिर जी के ट्रस्टी वयोवृद्ध धर्म प्राण श्री हरकचन्द जी सरावगी की अध्यक्षता में हुआ। समारोह में प्रधान अतिथि डी.आई.जी. श्री सुल्तान सिंह एवं श्री जैसराज जी पाण्ड्या उद्घाटनकर्ता श्री सुमेरमल जी चूड़ीवाल रहे।

मंगलाचरण श्रीमती अनिता देवी गंगवाल ने किया। अभिनन्दन गीत श्री फूलचन्द गंगवाल ने पढ़ा। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध संस्था श्री मित्र मंडल के सदस्यों द्वारा अत्यन्त ही आकर्षक भक्ति संगीत प्रस्तुत किया गया।

आमंत्रित अतिथियों का माल्यार्पण से स्वागत किया गया। नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष श्री भागचन्द जी पहाड़िया भी मंच पर विरामान थे। समारोह का उद्घाटन समारोह के उद्घाटनकर्ता एवं सौजन्यकर्ता सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता परम मुनिभक्त श्री सुमेरमल जी चूड़ीवाल ने दीप प्रज्वलित करके किया।

वार्षिक कलशाभिषेक

भीलवाड़ा। मुनि श्री पद्मनन्दीजी महाराज का ससंघ डा० राधाकृष्ण कालोनी में आगमन हुआ। मुनि श्री ने अपने उद्बोधन में बताया कि शुद्ध व शान्त विचार रखने से धर्म में आस्था का उदय होता है, भगवान की भक्ति से शांति मिलती है व समाज में एकता से ही धर्म का विकास होता है।

दोपहर में मुनिसंघ के सानिध्य एवं श्री एन.के. पाटनी, पुलिस अधीक्षक भीलवाड़ा के मुख्य आतिथ्य में वार्षिक कलशाभिषेक का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ कु० अनिता पहाड़िया के गीत से हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में आदिनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष डा० जैन द्वारा मुख्य अतिथि एवं आगन्तुकों का स्वागत किया तथा मंदिर निर्माण की प्रगति का ब्यौरा देते हुए बताया कि अब तक निर्माण कार्य में ६.०० लाख रुपये व्यय हो चुके हैं। शेष निर्माण कार्य जिसमें मूल वेदीजी एवं शिखर का कार्य भी सम्मिलित है, में करीब २० लाख रुपये व्यय होने हैं। शेष निर्माण कार्य के लिए अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देने हेतु निवेदन किया।

इस अवसर पर महाराष्ट्र में आये भूकम्प पीड़ित परिवारों की सहायतार्थ सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा मुख्य अतिथि महोदय को २२,१५० रुपये का ड्राफ्ट भेंट किया व ३१ हजार रु० की राशि और भेंट करने की घोषणा की इस तरह कुल ५३,१५० रु० की सहायता दी। कार्यक्रम का संचालन श्री कैलाश चन्द शाह ने किया।

स्वयंभू पुरस्कार वर्ष- १९९३

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी (राजस्थान) द्वारा अपभ्रंश साहित्य के सृजन एवं लेखन के प्रोत्साहन हेतु दिये जाने वाले ५००१/- "स्वयंभू पुरस्कार" के लिए अपभ्रंश साहित्य से सम्बन्धित विषय पर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में रचित रचनाओं की चार प्रतियां ३१ दिसम्बर, १९९३ तक आमन्त्रित हैं।

वर्ष जनवरी, १९८८ से पूर्व की प्रकाशित तथा पहले से पुरस्कृत कृतियां सम्मिलित नहीं की जायेंगी। अप्रकाशित कृतियां भी प्रस्तुत की जा सकती हैं, उनकी तीन प्रतियां स्पष्ट टंकण/फोटोस्टेट की हुई तथा जिल्द बंधी होनी चाहिए। पुस्तकें संस्थान की सम्पत्ति रहेंगी, वे लौटाई नहीं जावेंगी।

नियमावली तथा आवेदन का प्रारूप प्राप्त करने के लिए अकादमी कार्यालय से पत्र-व्यहार करें।

-डा० कमलचन्द सोगाणी
संयोजक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
दिगम्बर जैन नसियां भट्टारक जी

आचार्य वीरसागर समाधि दिवस

श्रवणबेलगोला, १५ अक्टूबर। आज यहां चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य वीरसागरजी महाराज का समाधि दिवस विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया।

प्रातः पूज्य आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज एवं समस्त मुनिसंघ की उपस्थिति में शान्ति विधान का आयोजन हुआ। प्रतिष्ठाचार्य पंडित हंसमुख जी धरियावद के द्वारा विधि-विधान से एवं सुप्रसिद्ध गीतकार अशोक जैन भोपाल के संगीत से यह विधान अत्यंत प्रभावक हो गया था। श्री निर्मल कुमार जैन सतना एवं चन्दूभाई अहमदाबाद ने सपत्नीक यह विधान पूजा की।

मध्यान्ह दो बजे से आचार्य संघ के सान्निध्य में प्रवचन सभा आयोजित की गई। इसमें सर्वप्रथम श्री निर्मल जी ने पूज्य आचार्य वीरसागरजी महाराज के जीवन का एवं उनकी आचार्य परम्परा का संक्षिप्त परिचय दिया। स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने सागर शब्द की विशद व्याख्या करते हुए आचार्य वीरसागरजी के गुणों का स्मरण किया। इसके बाद ब्रह्मचारी बंधु, आर्यिका माताओं एवं मुनिराजों ने अपने भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में थे परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज, पूज्य मुनि श्री योगसागरजी महाराज, उत्तमसागरजी महाराज, स्वभाव सागरजी महाराज, पुण्यसागरजी महाराज, सुखसागरजी महाराज, सौम्य सागरजी महाराज, चिन्मयसागरजी महाराज एवं पवित्रसागरजी महाराज, पूज्य आर्यिका जिनमती माताजी, सन्मति माताजी, सुप्रकाशमती माताजी एवं सुभूषणमती माताजी, ब्र० भावना जी, ब्र० त्रिलोक चंदजी, ब्र० दीपकजी एवं स्थानीय विद्वान पं० शान्तिराज जी शास्त्री।

रात्रि में गीतकार अशोक जी के संगीत के साथ आरती का भव्य आयोजन किया गया।

- जी०वी० शान्तराजू

शंका समाधान

- श्री पं० जवाहरलाल शास्त्री, भीण्डर

जैन गजट के पूर्व सम्पादक श्रीयुत पं० कुंजीलाल जी न्यायतीर्थ की शंकाएं (दिनांक १३.५.८३ ई०)

प्रश्न- आत्मा में श्रद्धा नाम का गुण, जिसकी पर्याय सम्यग्दर्शन है। "शास्त्रीय प्रमाणों से सिद्ध करें।"

उत्तर- सम्मतं होंति जीव गुणा ।।१५।। गो.क.

भावरूप अर्थ- सम्यक्त्व भी जीव गुण है। फिर आगे प्रथमोपशम सम्यक्त्व को भाव अर्थात् पर्याय कहा है:-

पढमुवसमसम्मभावजंतेण ।।२६।। गो.क.

अर्थात- प्रथम उपशमसम्यक्त्व भाव रूप यन्त्र से यहां पर प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन को भावरूप यानी पर्यायरूप कहा है। सो ठीक ही है। क्योंकि इस सम्यग्दर्शन का काल अन्तर्मुहूर्त है (षट्खंडागम, कालानुगम) अतः प्रथम सम्यग्दर्शन अन्तर्मुहूर्तवर्ती पर्याय है, न कि गुण। गुण नहीं क्योंकि गुण तो अनादिनिधन होते हैं (सहभुवो गुणाः) इसी तरह क्षायिक सम्यक्त्व व वेदक सम्यक्त्व भी पर्यायें हैं तथा इनका काल क्रमशः सादि अनिधन तथा वेदक सम्यक्त्वं की अपेक्षा अन्तमुहूर्त से ६६ सागर पर्यन्तकाल है। **ज.ध. ९/३१०**

ये सभी (यानी तीनों सम्यक्त्व) व्यंजन पर्यायरूप हैं। इसी तरह मिथ्यात्व भी पर्याय है। मिथ्यात्व व्यंजन पर्याय है। कहा भी है- **मिच्छत्तं पि वंजण पज्जाओ। धवल ४/३३७**

अर्थात- मिथ्यात्व भी व्यंजन पर्याय है। इस प्रकार उपर्युक्त कथन से सिद्ध होता है कि प्रथमोपशम सम्यक्त्व, द्वितीयपोशम सम्यक्त्व, वेदकसम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व तथा मिथ्यात्व तो पर्यायें हैं और सम्यक्त्व (यानी सम्यग्दर्शन) को गुण (गो०क० १५) कहा गया है।

अतः आत्मा के सम्यक्त्व गुण (दर्शनगुण) का स्वाभाविक परिणमन प्रथम उपशम सम्यग्दर्शन आदि रूप है तथा वैभाविक परिणमन मिथ्यात्व रूप है। (यहां परिणमन= पर्याय या अवस्था है)

यहां शंकाः- क्षायिकसम्यक्त्व, सो तो अन्तरहित है वह पर्याय नहीं हो सकती? क्योंकि जो अन्तरहित है वह तो द्रव्य होता है?

समाधान- तत्थ जो वंजणपज्जाओ सो जहण्णुक्कस्सेहिं अंतोमुहूत्तासंखेज्जलोगमेत्त कालावट्ठाणो अणादअणंतोवा। धवल ९/२४२-४३-४४

अर्थ- व्यंजन पर्याय का टिकने का काल जघन्य से अन्तमुर्हूर्त और उत्कृष्ट से असंख्यात लोक मात्र काल है, अथवा उत्कृष्ट से अनादि अनन्त है। अतः व्यंजनपर्याय का अवश्य विनाश होना चाहिये, ऐसा कोई नियम तो है नहीं। कहा भी है-

ण च विंजणपज्जायस्स सव्वस्स विणासेण होदव्वमि दि णियमो अथ्रि, एयंतवादप्पसंगादो। ण च ण विणस्सदित्ति दव्वं होदि उप्पाय-ट्ठिदि-भंग-संगयस्स दव्वभाव ब्भुवगमादो। धवल ७/१७८

अर्थ- सभी व्यंजन पर्याय का अवश्य नाश होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है क्योंकि ऐसा मानने पर एकांतवाद को प्रसंग आ जायगा। ऐसा भी है नहीं, कि जो वस्तु विनष्ट नहीं होती वह द्रव्य ही होनी चाहिये क्योंकि जिसमें उत्पाद व्यय और ध्रौव्य पाये जायें उसे द्रव्यरूप से स्वीकार किया गया है। ध. ७/१७८

भगद्वीरसेनस्वामी इस प्रकार "सम्यकत्व" गुण तथा प्रथमोपशम सम्यक्त्व आदि पर्याय है, यह सिद्ध हुआ।

अब देखते हैं कि श्रद्धा क्या है?

भगवज्जिन सेन स्वामी महापुराण में कहते हैं कि **श्रद्धारुचि स्पर्शप्रत्ययाश्चेति पर्यायाः**

।। पर्व ९ श्लोक १२३ पृष्ठ ३२८ महावीर जी ।। से प्रकाशित

अर्थ- श्रद्धा, स्पर्श, और प्रत्यय (प्रतीति) ये सम्यग्दर्शन के अपरनाम (पर्यायवाची नाम) हैं।

इस कथन से सिद्ध होता है कि गो.क. गाथा १५ में जो सम्यक्त्व (सम्यग्दर्शन) को जीवगुण कहा उसकी जगह श्रद्धा भी कहा जा सकता है। श्रद्धागुण कहो या सम्यक्त्वगुण (सम्यग्दर्शन गुण) अर्थात कहो, एक ही बात है तथा इनकी पर्यायें मिथ्याश्रद्धा एवं सम्यक्श्रद्धारूप अथवा मिथ्यात्व एवं प्रथमोपशम सम्यक्त्व आदि रूप हैं।

प्रश्न- आगम में श्रद्धा को सम्यक्त्व अन्यत्र कहां कहा अथवा श्रद्धागुण ऐसा कहां कहा?

उत्तर- इसी को १ कहा जाता है-

शुद्धात्मैक्षोपादेय इति श्रद्धानं सम्यक्त्वम्। समयसार ता.वृ. २८

अर्थ- शुद्धात्मा ही उपादेय है ऐसी श्रद्धा सम्यक्त्व है।

नोटः- यहां श्रद्धा को सम्यक्त्व कहा।

इसी तरह कहीं-कहीं रूचि प्रतीति आदि को भी सम्यक्त्व यानी सम्यग्दर्शन कहा क्योंकि सम्यक् विशेषणपूर्वक दर्शन में स्थित "दृषि" धातु का श्रद्धान (श्रद्धा) रूप अर्थ करने में कोई दोष नहीं है। कहा भी है-

दृष्टेरालोकार्थत्वात् श्रद्धानार्थगतिः नोपपद्यते? धातूनामनेकार्थत्वान्नैष दोषः स.सि. १/२

अर्थ- दर्शन शब्द दृशि धातु से बना है (सम्यग्दर्शन के प्रकरण में) अतः इससे श्रद्धा रस अर्थ का ज्ञान नहीं हो सकता? **उत्तर-** धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं, अतः दृषि धातु का श्रद्धान अर्थ करने में कोई दोष नहीं है। **"भगवद्पूज्यपादस्वामी"**

अतः "सम्यग्दर्शन=सम्यग्श्रद्धान" ऐसा कहा जा सकता है और जब "श्रद्धान" शब्द से समीचीन (यानी सम्यक्) श्रद्धान ही अपेक्षित हो तब सम्यग्दर्शन से श्रद्धान ऐसा लघु शब्दरूप पर्यायवाचक नाम भी घोतित मान लेना विरुद्ध नहीं पड़ता। कहा भी है- ("श्रद्धा" सम्यक्त्व के अर्थ में):-

(१) सड्ढ़ा (श्रद्धा) सद्गुरूपदेश विज्ञातार्थरुचिः। भगवती अराधना मूला. ४३१ (टीकाकार आशाधर जी)

अर्थ- समीचीन गुरु के उपदेश से जाने हुए पदार्थों में जो रूचि है, उसे श्रद्धा कहते हैं।

(२) तस्य व्यामोह संशीति विपर्यास विवर्जिता इत्थमेव प्रतीतिर्या श्रद्धा सा कीर्तिता बुधैः। (मोक्षपंचाक्षिका ४२, मा. दि. जैन ग्रंथमाला, मुंबई)

अर्थ- व्यामोह, संशय; विपर्यय रहित जो प्रतीति सो श्रद्धा है।

(३) श्वेताम्बर योग शास्त्र विवरण में तो ३/१२४ पर सम्यक्त्व के अर्थ में ही श्रद्धा की परिभाषा की है।

प्रश्न- गोम्मटसार के अतिरिक्त सम्यक्त्व को अन्यत्र कहां "गुण" कहा है। यथा-

अस्त्यात्मनो गुणः कश्चित् सम्यक्त्वं निर्विकल्पकम्।

अर्थ- (भावरूप अर्थ) सम्यक्त्व आत्मा का गुण है।

(गा. ३७५-३७७ पृ० ३७० सुबोधनी टीका) (उत्तराधं)

यहां सम्यक्त्व को (सम्यग्दर्शन) गुण कहा तथा इसी का अपर नाम श्रद्धा है ऐसा महापुराण ९/१२३ में कहा है। अतः श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन है जो कि आत्मा का गुण है। (श्रद्धा से यहां समीचीन श्रद्धा अपेक्षित है।)

(पंचाध्यायी में कहीं श्रद्धा को ज्ञान पर्याय भी कहा है, (२/४९३ पं. ध्यायी) वहां श्रद्धा को सम्यक्त्व का लक्षण (चिन्ह) कहा है (पं. ध्या. २/४२३) पर वह बात यहां अविवक्षित है) सारतः श्रद्धागुण कहो या सम्यक्त्व (दृष्टि या दर्शन) गुण कहो। पर्यायवाची शब्द होने से एक ही बात है तथा इनकी उपशमसम्यक्त्व, वेदकसम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व (श्रद्धान्तश्रद्धान की मैल रूप पर्याय) तथा मिथ्यात्व पर्यायें हैं। अथवा यों कहो कि मिथ्याश्रद्धान, सम्यक्श्रद्धान व मिश्रश्रद्धान रूप पर्यायें श्रद्धागुण की हैं।

यह आगम से निर्णय है। मेरे विचारानुसार "सम्यग्दर्शन गुण की उक्त पर्यायें हैं, ऐसा कहने के बजाय दर्शन गुण की उक्त (प्रथमोपशम सम्यक्त्व, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व, वेरक, क्षायिक, सम्यग्मिथ्यात्व, मिथ्यात्व) पर्यायें हैं तथा दर्शन गुण को श्रद्धागुण भी कह सकते हैं।" ऐसा कहना अत्युत्तम होगा।

मात्र मेरे विचारों में शब्दफेर हैं, (वह भी यह कि सम्यग्दर्शन की जगह "दर्शन", इतना मात्र कहना) भावफेर नहीं। लेकिन इस जगह फिर इतना ध्यान रखना होगा कि यह वह "दर्शनगुण" नहीं है कि जिसकी पर्यायें चक्षुदर्शन आदि हैं। बल्कि यह वह दर्शन गुण है, जिसकी पर्यायें मिथ्यादर्शन व प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन आदि तथा सम्याग्मिथ्यादर्शन नामक होती है। **अलं विशेषेण।**

नीचे तालिका देता हूं ताकि विषय और स्पष्ट हो जाये

शब्द पर्यायवाची अन्य शब्द

श्रद्धा = सम्यक्त्व, सम्यग्दर्शन (म.पु. ९/१२३)

मिथ्याश्रद्धा = मिथ्यात्व, मिथ्यादर्शन, विपरीत दर्शन

श्रद्धा = सम्यक्श्रद्धा (पं० ध्या० २/४१८) या सम्यग्दर्शन

मिथ्यात्व = मिथ्यात्व या अश्रद्धा, विपरीत श्रद्धा प० ध्या० २/४१८ (सुबोधिनी टीका)

सम्यक्श्रद्धा = सम्यग्दर्शन

समल सम्यक्श्रद्धा = बेदक सम्यग्दर्शन

निर्मल अस्थायी आंन्तमूहूर्तिकी श्रद्धा = उपशमसम्यक्त्व

दृढ़, निर्मल, स्थायी श्रद्धा = क्षायिकसम्यक्त्व

मिश्र श्रद्धा = सम्यग्मिथ्यात्व

मिश्र श्रद्धा = श्रद्धानाश्रद्धानाशं या मिश्रण

श्रद्धा = दर्शन, दृष्टि स.सि. १/२

।।समाप्त।।

अपनी शंकायें निम्न पते पर भेजें:-
श्री पं० जवाहरलाल जैन शास्त्री
मु०पो०- भीण्डर
जिला- उदयपुर (राज०)

प्राणी मात्र को अपना जैसा समझिए। आप ही सुखी रहना चाहते हैं, ऐसा नहीं है, किन्तु विश्व के सभी प्राणी सुखी रहना चाहते हैं। सभी का चरम लक्ष्य यही है। हम अपनी सुख शांति बनाये रखने के लिए दूसरे की सुख शांति को मिटा दें, तब इसका अर्थ है कि हम अपनी सुख शांति मिटाते हुये मानवता को नहीं समझते। सिद्धान्त की बात यह है कि हम दूसरे की सुख शांति मिटाकर स्वयं की सुख शांति बनाये नहीं रख सकते। यह तथ्य है, इसे गले उतारना चाहिए।

- भगवान महावीर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

होटल राजा सेठ

73/24, कलक्टरगंज, कानपुर-1 (उ०प्र०)

फोन- 366381, 269309

(रलवे स्टेशन के बाहर, घण्टा घर चौराहे पर, मंजूश्री सिनेमा के बगल में)

☛ शुद्ध शाकाहारी भोजन

☛ बड़े व हवादार कमरे

☛ ठहरने की उत्तम व्यवस्था

णमोकार वाले बाबा को भावभीनी श्रद्धांजलि

हस्तिनापुर, २२ अक्टूबर। तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर की एक शोक सभा मंदिरजी के प्रांगण में परमपूज्य श्री १०८ आदिसागर जी महाराज के सानिध्य में हुई जिसमें परमपूज्य प्रातः स्मणीय १०८ आचार्य श्री कल्याण सागर महाराज (णमोकार वाले बाबा) के स्वर्गारोहणं का समाचार सुनकर हतप्रभ रह गये। सभी ने आपके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। आपने समूचे विश्व को णमोकार मंत्र के प्रभाव से चमत्कृत किया था। तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रधानमंत्री, श्री सुकमार चन्द्र जी जैन, समवशरण संयोजक श्री हंस कुमार जी जैन (सर्राफ), तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रबन्धक श्री मुकेश कुमार जी जैन, श्री सुरेन्द्र कुमार जी तीर्थक्षेत्र पर पधारे यात्री बन्धु, उदासीन आश्रम के त्यागी व्रती, गुरुकुल के छात्रों एवं पं० सरमनलाल जी शास्त्री (दिवाकर) आदि ने श्रद्धासुमन अर्पित किये एवं शांति के लिये ९ बार णमोकार मंत्र का मौन जाप किया।

- सरमनलाल जैन

जैन युवा संगटन सम्मानित

कलकत्ता। दशलक्षण व्रत कर्ताओं की सामूहिक शोभायात्रा एवं समस्त समाज के सामूहिक प्रीतिभोज के सफल आयोजन हेतु जैन समाज की ओर से आयोजित जैन युवा संगठन के कर्मठ कार्यकर्ता उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल जी पाटोदी को नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष श्री भागचन्द पहाड़िया ने माल्यार्पण कर सम्मानित किया।

समारोह को सफल बनाने में नवयुवक मण्डल के मंत्री श्री विमल पाण्ड्या, समारोह संयोजन श्री अनिल बड़जात्या, श्री अजीत पाण्डया, श्री अशोक छाबड़ा, श्री अजीत सेठी, श्री विजय जैन, जय जैन, श्री प्रवीण बज, श्री सुशील गंगवाल आदि कार्यकर्ता सक्रिय रहे। श्री कैलाश चन्द जी पाण्डया एवं समारोह सौजन्यकर्ता श्री सुमेरमल जी चूड़ीवाल के प्रति आभार प्रदर्शित किया गया।

- अशोक कुमार छावड़ा

भूल सुधार

जैन गजट के 28 अक्टू. के अंक में पेज 6 पर प्रकाशित फोटो गलत छप गया है। जिसके लिये हमें खेद है।

- प्रकाशक

पं० जवाहरलाल जी सिद्धान्त शास्त्री सहारनपुर में

इस वर्ष सकल दिगम्बर जैन समाज, सहारनपुर के तीव्रपुण्योदय से एवं श्री विनोदकुमार जैन व श्री विजयकुमार जी जैन के अथक आग्रह व कई वर्षों के प्रयासों के बाद-भीन्डर (जि. उदयपुर) राज० से पं० श्री जवाहरलाल जी सिद्धांतशास्त्री- सहारनपुर में पर्यूषण पर्वराज में श्रुत-धर्म प्रवचनार्थ पधारे।

जिस प्रकार सहारनपुर (उ.प्र.) नगरी स्व० पं० श्री रतनचंद जी मुख्तार एवं उनके अनुज स्व० बाबू श्री नेमिचंद जी वकील के नाम से प्रख्यात है उसी प्रकार भीन्डर (राजस्थान) ग्राम भी पं० श्री जवाहरलाल जी जैन सिद्धातशास्त्री के नाम से प्रख्यात है।

पं० श्री जवाहरलाल जी- देव-शास्त्र-गुरु भक्त, निष्पक्षवक्ता आगम निष्णात-कृशदेहधारक, उदासीन एवं निरपेक्ष पण्डित हैं। यदि उनको कपड़े से ढका हुआ मुनि अथवा वर्तमान युग का **''श्रीमद् रायचन्द''** कहा जाय तो कोई भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनका तलस्पर्शी आगम ज्ञान एवं वक्तृत्व कला ही उनके व्यक्तित्व का परिचायक है, न कि उनकी कृश देह।

श्री तत्वार्थसूत्र अपरनाम श्री मोक्षशास्त्र जैन आगम का प्राण है। इसमें दस अध्याय हैं। प्रतिदिन तत्वार्थसूत्र जी के एक-एक अध्याय पर पं० श्री जवाहरलाल जी ने बहुत ही सरल व सरस शैली के द्वारा वाचना की। रात्रि में जैनबाग मंदिर जी में श्री जैन दर्शन प्रचारक समिति, वीरनगर के बच्चों द्वारा प्रतिदिन आरती, भजन व नृत्य का कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर ढंग से होता था। उसके पश्चात् प्रतिदिन उत्तम क्षमादि दस धर्मों पर पं० श्री जवाहरलाल जी सिद्धातशास्त्री के प्रवचन बहुत ही मार्मिक व सरल शैली में होते थे। उनकी जादू भरी प्रवचनशैली, श्रोताओं को प्रतिदिन उमड़-उमड़ कर आकर्षित करती थी। उनके प्रवचनों के पश्चात्-मधुवन से पधारे हुए ब्र० श्री राजेश कुमार जी जैन के भी संक्षिप्त प्रवचन बहुत ही अच्छे ढंग से होते थे।

पं० श्री जवाहरलाल जी के प्रवचनों की जो छाप सकल दिगम्बर जैन समाज पर पड़ी, वह अमिट है। उनसे प्रभावित होकर जैन समाज के सदस्यों द्वारा पुनः उनसे सहारनपुर में पधारने का विशेषाग्रह किया गया। पं० जी के द्वारा उनकी ''स्याद्वाद'' नामक कृति (जो अभी तक अप्रकाशित है) का परिचय प्राप्त होने पर-सकल दिगम्बर जैन समाज के बन्धुओं ने उस अमूल्य ग्रन्थ का प्रकाशन अपनी तरफ से करने का निर्णय लिया। इसके लिए अनेक भव्यात्माओं ने अपना आर्थिक सहयोग दिया।

पं० श्री जवाहरलाल जी कितने अधिक निर्लोभी व निरीह वृत्ति जीव हैं इसका ज्ञान उस समय हुआ जबकि समापन समारोह के आयोजन में आपने समाज से किसी प्रकार का भी आर्थिक सहयोग या शाल, वस्त्र आदि लेने से बिल्कुल मना कर दिया।

अन्त में पं० जी के प्रति श्री विजयकुमार जी जैन, श्री वीरेश्वर प्रसाद जी (मंत्री), श्री विनोद कुमार जी जैन शास्त्री, श्री इन्द्रसेन जी जैन आदि वक्ताओं द्वारा उनका आभार प्रकट किया गया तथा उनसे क्षमा याचना की गई। पं० जी ने सकल दिगम्बर जैन समाज को धर्म के प्रति बहुमुखी होने, स्वाध्याय करने व सभी जीवों के आत्म कल्याण की भावना के साथ अपने वक्तव्य से विराम लिया।

- विनोद कुमार जैन
(एम.काम., सी.ए, इन्टर)
चिलकाना रोड,
सहारनपुर

आचार्य श्री विमलसागर . . .

पेज १ का शेष

कि ये महान तपस्वी हैं। ऐसी भव्य आत्मा के दर्शन बड़े भाग्य से होते हैं। उन्होंने उनकी दी हुई अंगूठी दिखाते हुये सबको कहा कि इससे मुझे बड़ी शक्ति मिली है।

उन्होंने समस्त जैन समाज को आश्वासन देते हुए कहा कि आप लोग अल्पसंख्यक समाज हैं। आपके हितों की सुरक्षा हमेशा बिहार सरकार करेगी।

मुख्यमंत्री जी ने महासभा द्वारा प्रकाशित आर्ष परम्परा के महान विद्वान स्व० श्री पं० मक्खनलाल जी शास्त्री के स्मृति ग्रंथ का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि आचार्य श्री के गुरु के स्मृति ग्रंथ का विमोचन उनके हाथ से हो रहा है।

महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी जी ने भावपूर्ण शब्दों में आचार्य श्री के गुणगान के साथ-साथ जैन समाज के महान नवयुवक श्री आर.के.जैन की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उन्हें सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से **''गुरुभक्त शिरोमणि''** की उपधि से समलंकृत किया। सभी विद्वानों का सम्मान किया गया।

तीसरे दिन मुरैना महाविद्यालय की ओर से एक भावपूर्ण अभिनंदन पत्र का समर्पण हुआ। आचार्य श्री की सेवा में **''मंत्र विद्या वारिधि''** उपाधि समर्पित की गई।

८ अक्टूबर को बिहार के राज्यपाल श्री ए.आर. किदवई जयन्ती समारोह में भाग लेने हेतु मधुवन पधारे। उन्होंने जयन्ती समारोह में **''वात्सल्य रत्नाकर''** नामक वृहद् ग्रन्थ का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि श्री सम्मेदशिखर को उतना ही पवित्र बनाया जाना चाहिये, जितना जैन धर्म पवित्र है। श्री किदवई ने अपनी सम्मेदशिखर की यात्रा की तिथि के दिन पूर्ण शाकाहारी रहने की घोषणा की। उन्होंने दिगम्बर जैनाचार्य विद्यासागर जी महाराज के दर्शनार्थ पधारने पर भी इसी तरह की प्रतिज्ञा की थी, जिसे वे निभा रहे हैं।

अधिकांश संचालन कार्य श्री स्वरूप चंद सोगानी (हजारीबाग) ने किया। श्री सोगानी इस महोत्सव के कार्याध्यक्ष थे।

जयन्ती समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम भी रही। जैन महिला मिलन हजारीबाग का इस निमित्त योगदान अपूर्व सराहनीय रहा।

९ अक्टूबर को विख्यात संगीत निर्देशक श्री रवीन्द्र जैन एवं विख्यात संगीत कलाकार श्री राजेन्द्र जैन ने धार्मिक भजन एवं संगीत प्रस्तुत किए।

दिगम्बर जैनाचार्य विमलसागर जी महाराज अपने विशाल संघ सहित समारोह में विराजमान थे। उपाध्याय भरत सागर जी महाराज समारोह के मुख्य प्रेरक रहे।

सर्वश्री जैन रत्न श्री हरकचन्द पांड्या, संघी, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी (लखनऊ), भगवान बाहुबलि गोमटेश्वर महामस्तकाभिषेक समिति की कलश आबंटन समिति के अध्यक्ष श्री उम्मेदमल पांड्या (दिल्ली), श्री शिखर चन्द पहाड़िया (बम्बई), पारस कुमार गंगवाल, ग्वालियर, श्री सुमेरचन्द पाटनी (लखनऊ), श्री महावीर प्रसाद सेठी (सरिया), श्री हीराभाई (बम्बई), श्री प्रकाश चन्द छाबड़ा (बम्बई), महासभा के संगठन मंत्री श्री शांतिलाल बड़जात्या अजमेर, जैन महिलादर्श की प्रधान सम्पादिका श्रीमती डा० कुसुम शाह, महासभा के प्रचार मंत्री- श्री भरत कुमार काला, श्रीमती शैलबाला काला (सम्पादिका- जैन महिलादर्श) आदि ख्याति प्राप्त श्रीमान् इस समारोह में सम्मिलित हुये।

महोत्सव के पावन अवसर पर मुनिभक्त सर्वश्री कन्हैयालाल पन्नालाल सेठी, डीमापुर, मोहनलाल श्रीपाल जैन- पहाड़ी धीरज दिल्ली, शिखरचन्द पांचूलाल पहाड़िया (कुचामन वाले) बम्बई, लक्ष्मीनारायण निर्मल कुमार गंगवाल- विजयनगर (आसाम), अशर्फीलाल अशोक कुमार जैन- इन्दौर, कोमलचन्द जैन राजहन्स होटल- भोपाल, चिरंजीलाल कमलचन्द्र चिंतामणि बज- जयपुर, रिखबचन्द अजित कुमार कासलीवाल- सेलम, पूनमचन्द गजराज गंगवाल- झरिया, अमरचंद पदमचंद पाटनी- डीमापुर, पदमचंद प्रेमचन्द सेठी- कलकत्ता, सरदारी लाल गोपीचंद पाटनी- जयपुर, वीरेन्द्र कुमार बड़जात्या- कलकत्ता की ओर से सभी साधर्मी बंधुओं के लिये प्रीतिभोज दिया गया।

कार्यक्रम के आयोजकों की ओर से महाराष्ट्र के भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ एक लाख रुपये की राशि का चेक मुख्यमंत्री जी को भेंट किया गया।

णमोकार वाले बाबा . .

पेज १ का शेष

धारण की थी। आपने अपना आचार्य पद अस्थायी रूप से मुनि श्री कीर्तिसागर जी महाराज को सौंप दिया था।

अंतिम दर्शन के लिये मन्दसार जिले से तथा राजस्थान के अन्य जिलों से हजारों श्रद्धालु जन उपस्थित थे। मुनि श्री के अंतिम संस्कार की क्रिया श्री पं० विजय कुमार गांधी ने सम्पन्न कराई। अग्नि संस्कार संयोजक श्री क्रांति चन्द जी मिंडा व श्री केसरीमल जी दोसी ने किया। स्थानीय कलेक्टर श्री टोलिया जी ने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। सर्व श्री नरेन्द्र नाहटा, महेन्द्र कुमार जी कोठारी, सुरेन्द्र लोडा बसेर जी अनेक विद्वानों ने अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की।

आचार्य श्री के निधन के समाचार सुनकर जावद, नीमच, मंदसौर दिगम्बर जैन समाज ने अपनी दुकानें बंद रखी।

- विजय गांधी

जैन गजट परिवार आचार्य श्री को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ उनकी सद्गति की कामना करता है।

- प्रकाशक

पारसनाथ में डकैतों . .

पेज १ का शेष

से देश भर के जैन समाज में क्षोभ की भावना फैल गयी है। इस पहाड़ पर स्थित जैन मंदिरों की पूजा के लिए देश भर से जैन यात्री हजारों की संख्या में बराबर आते रहते हैं परन्तु वहां सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। पिछले कुछ महीनों में इस पर्वत पर यात्रियों को लूटे जाने की अनेक घटनायें हो चुकी हैं, परन्तु पुलिस प्रशासन सुरक्षा हेतु आवश्यक कदम नहीं उठा रहा है।

पारसनाथ पर्वत का ही नाम श्री सम्मेद शिखर है तथा यह गिरिडीह जिले में अवस्थित है। इस पर्वत से २४ में से २० तीर्थंकरों एवं अनन्तानन्त जैन मुनियों को निर्वाण लाभ हुआ है। इस पर्वत के साथ जैनियों की गहरी धार्मिक भावना जुड़ी हुई है। इस पहाड़ पर लूटे जाने की घटनायें तो होती रहती है परन्तु गोली चालन की यह सर्वप्रथम घटना है।

- रांची एक्सप्रेस, २१ अक्टूबर से साभार

विशाल नेत्र शिविर सम्पन्न

जतारा। सन्तशिरोमणि पूज्य १०८ श्री आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य पूज्य १०५ ऐलक श्री दयासागर जी महाराज के आशीर्वाद से श्री दि० जैन समाज जतारा एवं श्री जैन नवयुवक संघ जतारा के सहयोग से जतारा में दिनांक ३३.९.९३ से २९.९.९३ तक विशाल निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया।

- कपूरचंद्र जैन

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

विश्व को अहिंसा, शान्ति, दया, करुणा और निःशस्त्रीकरण का सन्देश देने वाली
विश्व प्रसिद्ध 57 फुट ऊंची
गोमटेश्वर भगवान बाहुबली की मूर्ति का महामस्तकाभिषेक
19 दिसम्बर, 1993 को श्रवणबेलगोला में

अनेक परम पूज्य आचार्यों मुनिराजों, आर्यिकाओं और साधु-साध्वियों के सानिध्य एवं कर्मयोगी पूज्य भट्टारक चारुकीर्ति स्वामी जी के निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है। इस पुण्य अवसर पर सभी सपरिवार सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्रप्त करें।

कटारिया ट्रान्सपोर्ट सर्विस

जी- 55, भैरों मन्दिर,
पुरानी सब्जी मण्डी के पास,
दिल्ली- 54.

फोनः कार्यालयः- 236240, 2520841,
2933623, 2933624, 2518785
फैक्सः 91-11-2933622

श्री सम्मेद शिखर जी में सम्पन्न

'वात्सल्य रत्नाकर महोत्सव' की कुछ झलकियां

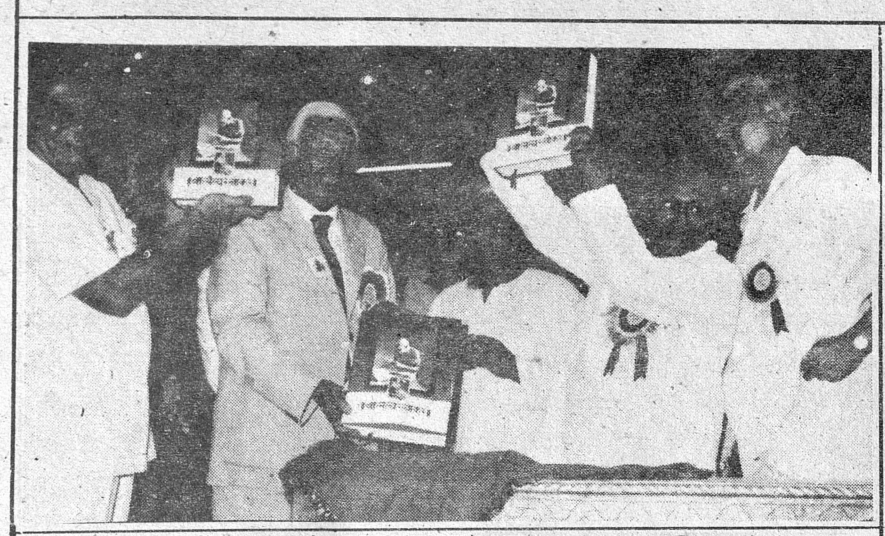

"वात्सल्य रत्नाकर" ग्रंथ का विमोचन करते हुये बिहार के राज्यपाल महामहिम डा० ए०आर० किदवई। साथ में समारोह के अध्यक्ष श्री आर.के.जैन, स्वागताध्यक्ष श्री शिखरचन्द जी पहाड़िया और महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी।

वात्सल्य रत्नाकर ग्रंथ का परिचय देते हुये गुरुभक्त शिरोमणी, महाराष्ट्र प्रांतीय महासभा के अध्यक्ष श्री आर०के० जैन, बम्बई।

सन्मार्ग दिवाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज से चर्चा करते हुये बिहार के मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद जी यादव।

सभा को संबोधित करते हुये बिहार के मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव।

आचार्य श्री विमलसागर जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये बिहार के मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव।

सूर्य प्रकाश ग्रंथ का विमोचन करते हुये श्री पन्नालाल सेठी डीमापुर अपनी मां, भातृवर्ग एवं धर्मपत्नी के साथ

श्री शिखरचन्द जी पहाड़िया को "समाज भूषण" पद प्रदान करते हुये महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी एवं महासभा के उपाध्यक्ष राय बहादुर श्री हरकचन्द जी पांड्या- रांची।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा प्रकाशित स्व० श्री पं० मक्खनलाल जी शास्त्री स्मृति ग्रंथ का विमोचन करते हुये बिहार के मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव। साथ में हैं महासभाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी, श्री शिखरचन्द जी पहाड़िया, श्री आर०के० जैन।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की ओर से सुधेश जैन (प्रकाशक एवं मुद्रक) द्वारा परमात्मा आटो प्रिंटिंग प्रेस, ३५४-ए, मोतीनगर, गोल चौराहा, लखनऊ से मुद्रित तथा नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स, ऐशबाग, लखनऊ से प्रकाशित।

सम्पादक- नरेन्द्रप्रकाश जैन